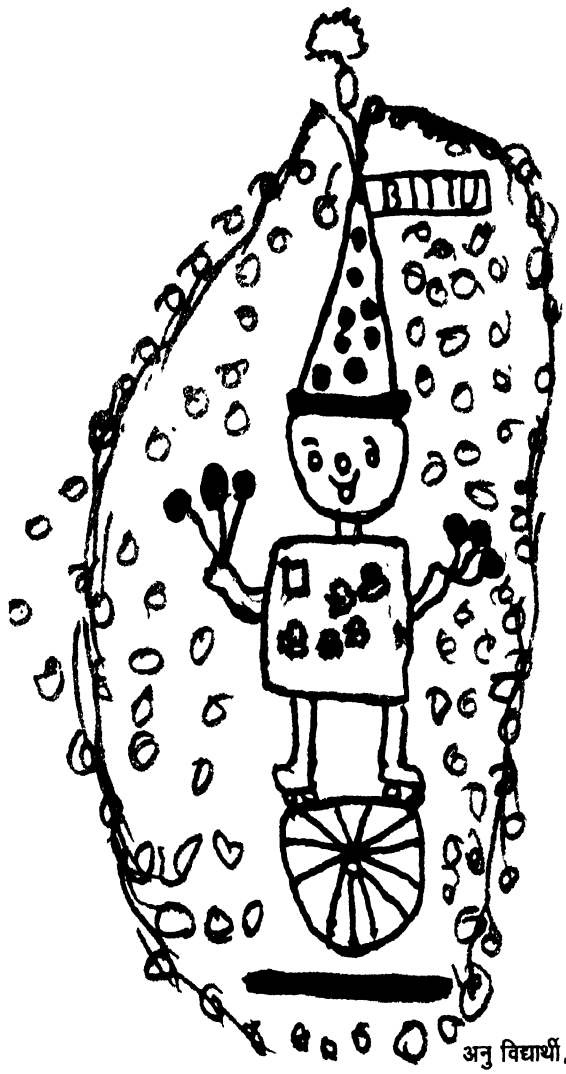

अनु विद्यार्थी, पहली, बीसलपुर, पीलीभीत, उ.प्र.

इमरान पठान, पाँचवीं, तख्तेश्वर, गुजरात

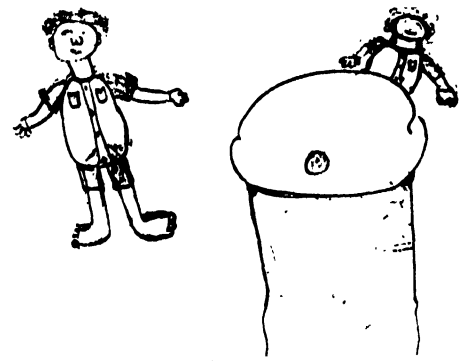

सुधांशु वर्मा, फैजाबाद, उ.प्र.

161 वें अंक में ....

विशेष

6 ❑ गणित : संख्याएँ लिखने की शुरूआत

20 ❑ जश्ने बचपन : एक अनुभव

कविता

13 ❑ लो मैं तुम पर करूँ रजाई

27 ❑ ये गुलाब के सुन्दर फूल

32 ❑ बन्दर

कहानी

34 ❑ आलसी जुआन

हर बार की तरह

2 ❑ इस बार की बात

18 ❑ खेल काग़ज़ का : फूल - पत्ती

26 ❑ वर्ग पहेली -91

28 ❑ माथा पच्ची

मेरा पन्ना पृष्ठ 5, 17, 23, 30, 31 एवं 33 पर।

धारावाहिक श्रृंखला

14 ❑ हमारे शिक्षक - 5

24 ❑ हमारी आवाज - 4

और यह भी

3 ❑ पाठक लिखते हैं

37 ❑ चकमक समाचार

आवरण चाइल्ड क्राफ्ट सीरीज़ की 'मैथेमेटिक' से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अध्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात....

हम अपनी एक ख़ुशी में तुम्हें भी शामिल करना चाहते हैं। चकमक प्रकाशित करने वाली संस्था, 'एकलव्य' को विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए जवाहरलाल नेहरू जन्मशती पुरस्कार दिया गया है। यह पुरस्कार वर्ष 1998-99 के लिए कलकत्ता की भारतीय विज्ञान सम्मेलन समिति ने दिया है।

'चकमक' एकलव्य संस्था के काम का एक छोटा हिस्सा है। संस्था का मुख्य काम स्कूली शिक्षा को बेहतर बनाना है। बेहतर से मतलब तुम जो कुछ पढ़ते हो वो सार्थक हो और उसे इस तरह पढ़ाया जाए कि पढ़ने वालों को मज़ा भी आए। एकलव्य ने विज्ञान की पढ़ाई के कुछ ऐसे तरीके सुझाए हैं जिनके द्वारा विज्ञान को सिर्फ़ किताबों से ही नहीं बल्कि अपने आसपास की चीज़ों से ज़्यादा आसानी से सीखा जा सकता है। इस तरह माध्यमिक शालाओं में विज्ञान पढ़ाने का एक सही तरीका विकसित हुआ है। यह तरीका 'करो और सीखो' की पद्धति पर आधारित है। विज्ञान का यह काम 'होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम' के ज़रिए मध्यप्रदेश के 500 से अधिक सरकारी और गैर-सरकारी स्कूलों में चल रहा है।

चकमक की कहानी तो तुम में से कई लोग जानते भी होंगे। चकमक पत्रिका की शुरूआत एकलव्य के विज्ञान के इस कार्यक्रम के शुरू होने के बाद हुई। स्कूलों में काम करते हुए यह लगा कि तुम बच्चों को पढ़ने के लिए कुछ और सामग्री भी होना चाहिए। एक ऐसी पत्रिका शुरू की जाए जो हमारे-तुम्हारे यानी अपने आसपास की, अपनी दुनिया-जहान की बातें करे। जिसमें तुम सब अपनी बात भी कह पाओ। और, जो कि हम सब में, समस्याओं को देखने, समझने और उनके हल निकालने की तार्किक और वैज्ञानिक समझ पैदा कर सके। चकमक अपना यह काम कहाँ तक पूरा कर पा रही है यह तो तुम सब चकमक के पाठक ही बता सकते हो।

विज्ञान शिक्षा और चकमक के अलावा संस्था के कुछ और भी काम हैं। कई ऐसी गतिविधियाँ हैं जिनके ज़रिए संस्था लोगों में वैज्ञानिक समझ विकसित करने का प्रयास कर रही है।

यह पुरस्कार संस्था और उससे जुड़े सभी साथियों के लिए एक प्रतीक है कि जो काम हम सब साथ मिलकर कर रहे हैं उसकी वाकई समाज में ज़रूरत है। और हमें इस काम में और लोगों को भी जोड़ते हुए आगे बढ़ना है। तुम तो हमारे साथ हो ही!

● चकमक

''मैं कक्षा चार में पढ़ता हूँ। मुझे चकमक बहुत अच्छी लगती है इसमें खेलों के बारे में भी लिखा करें। मुझे खेलना अच्छा लगता है।''

● रामोतार कुम्हार

''हमारे विद्यालय में चकमक आती है हम चकमक में से पढ़कर कई चीजें बनाना सीख गए हैं।''

● रीना शर्मा

''मैंने चकमक से ही पढ़ना सीखा है। हमारे गुरूजी हमें हर महीने चकमक पढ़ने को देते हैं। इसकी कविताएँ बहुत अच्छी लगती हैं।''

● नर्मदा चौधरी

''मैं चकमक दो साल से पढ़ रही हूँ। हमारे गुरूजी हमें घर पर पढ़ने के लिए भी चकमक देते हैं। आप छोटे बच्चों के खेल भी दिया करो। माथापच्ची बहुत कठिन लगती है।''

● कमला गल

''मुझे चकमक से एक शिकायत है। हम आपको चित्र बनाकर भेजते हैं और आप छापते नहीं। हम गुरूजी से कहते हैं तो वे भी कहते हैं कि मैं क्या करूँ? और बनाकर भेजो। अब मैं चित्र बनाकर भेजूँगी, आप जरूर छापना।''

● सुमित्रा शर्मा

''हमारे हिन्दी के गुरूजी ने हमें एक पत्र लिखने को कहा था। मैंने सोचा कि चकमक को पत्र लिखना चाहिए। आपको बहुत–बहुत धन्यवाद, मैंने पढ़ना चकमक से ही सीखा है। मैंने चकमक के लिए एक कविता भी बनाई है। अपने गुरूजी को दिखाकर आपके पास भेजूँगा।''

● राजकुमार जगल

''हमारी तीसरी कक्षा में गुबरेले का पाठ आया था परन्तु मैं गुबरेले के बारे में ज्यादा नहीं जानती थी। लेकिन जुलाई 1998 के अंक में गुबरेले के बारे में जानकारी पढ़कर अब तो मैं गाँव में गुबरेले को पकड़कर भी देख चुकी हूँ।''

● मोहनी मीणा

ये सभी एवं कुछ और चिट्ठियाँ हमें राजकीय प्राथमिक विद्यालय, चकवाड़ा, फागी, जयपुर, राजस्थान से आई हैं।

चकमक
सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर
माह ..... से
चकमक भेजना शुरू करें–
नाम .....
मोहल्ला .....
डाकघर
ज़िला
पिन
सदस्यता शुल्क रु. .....
.....

माह/वर्ष के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

नाम एवं हस्ताक्षर

सदस्यता दरें

छह माह :	40.00 रुपए
एक साल	75.00 रुपए
दो साल	140.00 रुपए
तीन साल	200.00 रुपए
आजीवन	750.00 रुपए *
आजीवन	1000.00 रुपए °

* इस सदस्यता पर आपके किसी मित्र को साल भर चकमक का उपहार

° इस सदस्यता पर एकलव्य के सभी प्रकाशनों की एक प्रति पर 50% की छूट

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से 'एकलव्य' के नाम में इस पते पर भेजें –

एकलव्य,
ई–1/25, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल 462 016 (म.प्र.)

भोपाल से बाहर के चेक से शुल्क भेजते समय कृपया 15.00 रुपए बैंक चार्ज अतिरिक्त जोड़ें।

ऐसा हो . . . .

मन चाहता खोलूँ लायब्रेरी
उस में चकमक हो मेरी
मन चाहता उन्हें पढ़ती जाऊँ
और सबको चकमक पढ़वाऊँ
मन चाहता चकमक आती जाए
संग–संग सबका मन बहलाए।

● **अंकिता शर्मा, भोपाल, म. प्र.**

मैं पहली बार आपसे पत्र व्यवहार कर रही हूँ। मुझे आपकी एक बाल–पुस्तिका चकमक के बारे में पता चला मैंने उसकी अपने शहर में काफ़ी खोज की परन्तु वह नहीं मिली। इसलिए मैंने सवालीराम जी को पत्र लिखकर आपका पता मँगाया। मैं नए साल से आपकी पत्रिका की सदस्य बनना चाहती हूँ।

● **जयश्री शर्मा, होशंगाबाद, म, प्र,**

चकमक का उपहार

अगर आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं तो अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/ परिवारजन का पता यहां लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों या चकमक का उपहार देना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम .....

मोहल्ला ..
डाकघर
ज़िला
पिन |

.....

.....

चकमक का नवम्बर का अंक प्राप्त हुआ। इसमें सह–शिक्षा, हमारे शिक्षक और छोटी कहानी कविताएँ अच्छी लगीं। खूब मज़ा आया। इस तरह चकमक आती है तो मेरा निराश मन खुशी से झूम उठता है। परन्तु जब चकमक में मेरा चित्र तथा कविता व कहानी जो मैं चकमक में भेजता हूँ वो नहीं आती है तो मेरा मन और भी निराश हो जाता है।

'इस बार की बात' यह उपाय हम लोगों को बहुत अच्छा लगा कि जो अंक हमें देर से प्राप्त होता था वह जल्दी प्राप्त हो जाएगा। इसके लिए हम अति प्रसन्न हैं। आपने जो फैसला किया वह बहुत अच्छा लगा।

● **महेन्द्र कुमार वैष्णव, रा. मा. वि. मकरेड़ा, अजमेर, राजस्थान**

''**पत्रिका** बच्चों में वैज्ञानिक सोच पनपाने वाली है व उनमें बोध-ज्ञान जगाएगी, ऐसी मेरी राय है। हिन्दी में ऐसी ही पत्रिकाओं की बाल–पाठकों के लिए ज़रूरत है।''

● **गोपीचंद श्रीनागर, झांसी, उ. प्र.**

चकमक का जनवरी 99 का अंक प्राप्त हुआ। सच में बहुत अच्छा लगा। साथ में कैलेण्डर भी बहुत सुन्दर है। मेरी ओर से चकमक के सभी कार्यकर्त्ताओं को तथा इसको चाहने वालों को नव वर्ष 1999 की हार्दिक शुभकामनाएँ।

● **विनोद कुमार सोनी, गढ़ाकोटा, सागर, म. प्र.**

चकमक का जनवरी 1999 का अंक दिसम्बर 1998 के अंतिम दिन मिला। पत्रिका की इसके पाठकों को उत्सुक प्रतीक्षा रहती है। जनवरी अंक में वर्ग पहेली –88 के हल की तरफ बच्चों मेरा ध्यान खींचा। संकेत ऊपर से नीचे 12 नम्बर में 'खाना देने वाला या अन्नदाता' है, हल में रफ़ीक शब्द छपा है। रफ़ीक शब्द का अर्थ (अरबी पुर्लिंग) है – मित्र, सखा, दोस्त, सहचर, हमराही। वास्तव में सही शब्द थोड़ा भिन्न है। वर्ग पहेली 88 में ऊपर से नीचे 12 क्रम के वाक्य के लिए सही शब्द होना चाहिए – रज्ज़ाक़ (अरबी विषेशण) = खाना देने वाला , अन्नदाता , पेट भरने वाला।

मेरा यह मानना है कि इतने कठिन, दूसरी भाषाओं के शब्दों का इस्तेमाल जहाँ तक हो सके वर्ग पहेली में नहीं करना चाहिए। बच्चों का मानसिक स्तर ध्यान में रखा जाए तो बेहतर। चकमक पढ़ते हुए एक पीढ़ी युवा हो गई है, हम जैसे प्रौढ़ भी इससे काफी कुछ सीखते हैं। इसके अब तक के 160 अंक ज्ञान–विज्ञान, कला संस्कृति और सबसे बढ़कर देहात के बच्चों की भावना का आइना है। महानगरों से दूर देहात तक चकमक का प्रसार भारत की नई पीढ़ी के लिए बहुत उपयोगी है।

● **वाचस्पति, काशी पुर नैनीताल, उ. प्र.**

मेरा पन्ना

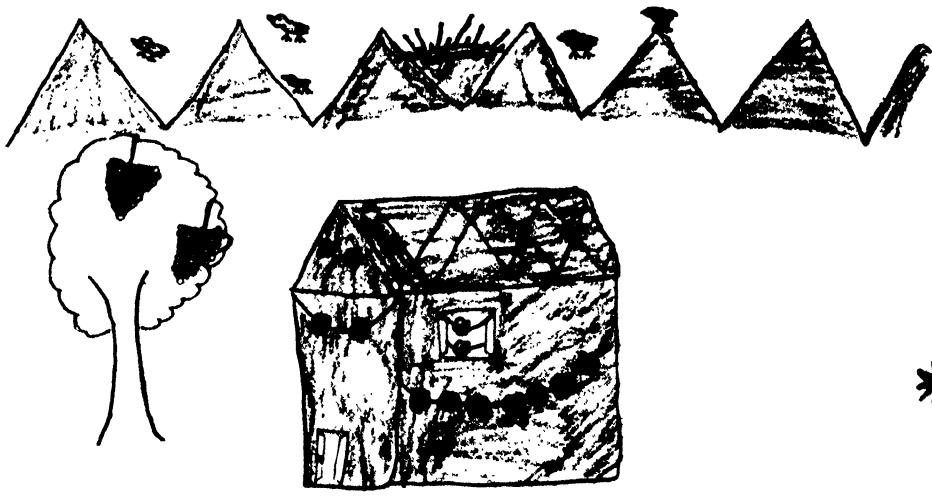

देवयानी पाण्डे, दूसरी, भोपाल, म. प्र.

रोमिल गादिया, पहली, उदयपुर, राजस्थान

देवकल्याणी, दूसरी, किरगी, राजनांदगाँव, म. प्र.

णित

संख्याएँ लिखने की शुरुआत

o अंजली नरोन्हा

तुमने पिछले अंक में गिनने की शुरुआत, गिनने के तरीकों और विभिन्न समाजों में संख्या के नामों के बारे में पढ़ा। गिनने की शुरुआत किसी-न-किसी काम से जुड़े हिसाब रखने की ज़रूरत से हुआ। कितने मवेशी चरने गए, कितने वापस आए? जौ के कितने बोरे गोदाम में रखे, कितने निकाले, कितने बचे? कितने रुपए उधार लिए, कितने लौटाए। जैसे-जैसे ये ज़रूरतें बढ़ती गईं, उनका लेखा-जोखा रखने की भी आवश्यकता पड़ी। पुराने ज़माने के जो हिसाब मिले हैं, उनमें हड्डियाँ और लकड़ियाँ हैं, जिन पर निशान बने हुए हैं। ये निशान धीरे-धीरे संख्या लिखने के तरीके बन गए। आओ, इस बार हम संख्याएँ लिखने के तरीके और उनके विकास के बारे में कुछ पढ़ें।

संख्याएँ लिखने की शुरुआत

गिनने के साथ-साथ जब उनका कुछ लेखा-जोखा रखने की ज़रूरत पड़ी तो लोगों ने एक-एक संगति के निशान लगाना शुरू किए। कई हज़ार साल पुरानी ऐसी हड्डियाँ, लकड़ी और पत्थर के टुकड़े मिले हैं जिन पर गिनती के निशान बने हैं। इनके कुछ चित्र तुम यहाँ देख सकते हो।

जोड़ने-घटाने के सवाल करते समय, बचपन में तुम लोगों ने ज़रूर लकीरें खींच-खींचकर जोड़ने-घटाने का काम किया होगा। जब इतनी सारी संख्याएँ मन में गिनने की क्षमता नहीं थी तो हम सभी ने इस तरीके का उपयोग किया है। यदि सवाल में बड़ी संख्याएँ हों, तो लकीरें खींचकर फिर गिनने में कई बार गड़बड़ी हो जाती है। इसलिए कई लोग पाँच-पाँच लकीरों के समूह बनाकर गिनते हैं। जैसे 𝍸 । इसमें पाँचवीं लकीर तिरछी बनती है ताकि उससे एक झुण्ड बन जाए। फिर गिनते समय 5-5 के समूह बनाकर 5-10-15-20-..... करके जल्दी हिसाब लगाया जा सकता है।

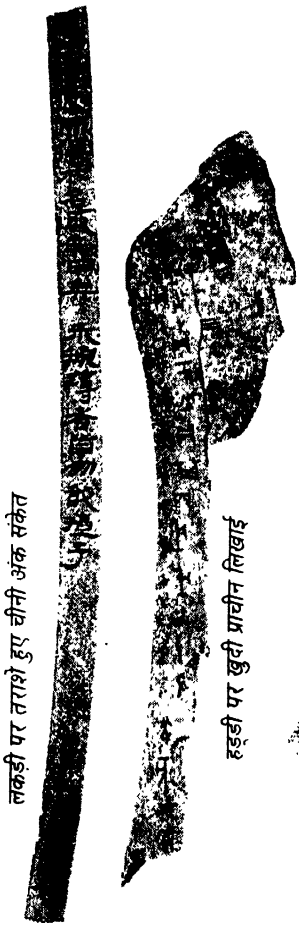

लकड़ी पर तराशे हुए चीनी अंक संकेत

हड्डी पर खुदी प्राचीन लिखाई

गीली मिट्टी की टेबलेट पर बने बेबीलोनी अंक संकेत

ऐसे ही पाँच या दस का समूह बनाकर निशान बनाना ही अंक लिखने की शुरुआत थी। बेबीलोन और मिस्र के लोग दस के समूह बनाते थे जबकि माया लोग पाँच का समूह बनाकर लिखते थे।

लगभग इसी तरह निशानों के समूहों से संख्याएँ लिखने की पद्धति सिंधु घाटी सभ्यता में भी पाई गई है। हालाँकि उनकी लिपि अभी तक हम लोग समझ नहीं पाए हैं।

संख्याएँ लिखने के कुछ उदाहरण –

5000 साल पहले बेबिलोन में गिनती ऐसे लिखी जाती थी –

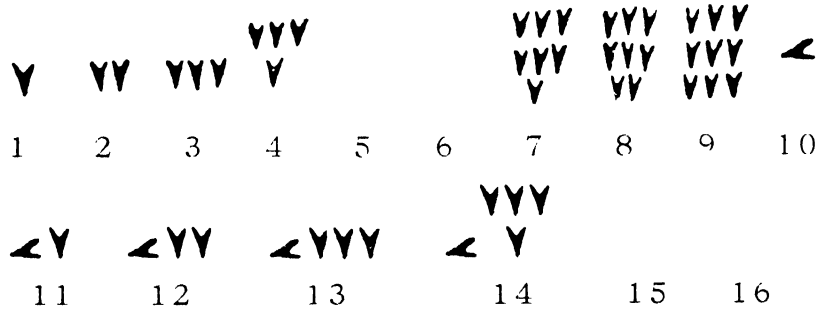

बेबीलोनी संख्याओं में 5, 6, 15, 16 तुम लिखो।

लगभग दो हज़ार साल पहले माया लोग इस तरह अपनी गिनती लिखते थे –

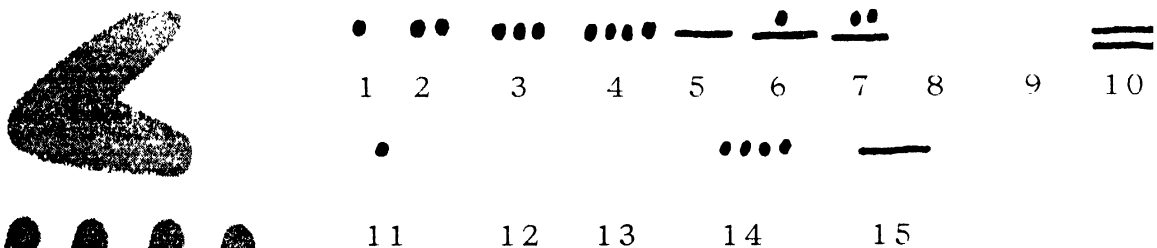

तुम देख रहे हो न, यहाँ पाँच के लिए अलग प्रकार का अंक बन जाता है। माया लोग 8, 9 कैसे लिखते होंगे ? और 12, 13 ? तुम कोशिश करो लिखने की।

मिस्र में इस प्रकार के अंक हुए

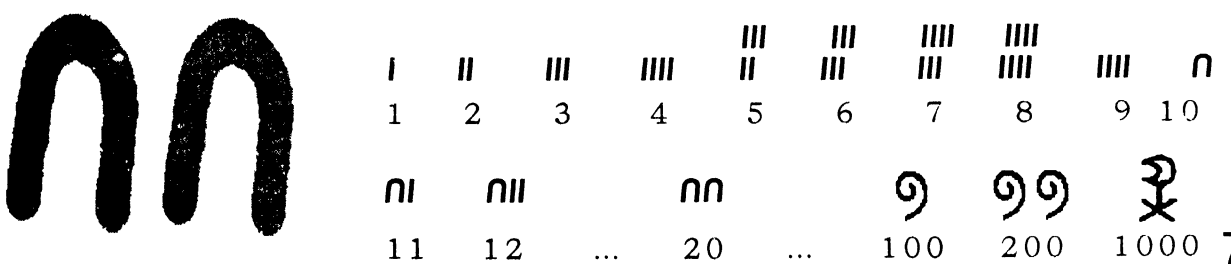

संख्या लिखने में स्थानीय मान व आधार का उपयोग

संख्या लिखने में स्थानीय मान का उपयोग तब होता है जब एक ही संकेत, एक से अधिक संख्याओं के लिए उपयोग किया जाए। यानी संकेत और स्थान मिलाकर ही संख्या का पता लगाया जा सकता है। जैसे यदि 4444 लिखा है, तो एक ही संकेत से यहाँ 4 अलग संख्याएँ दर्शाकर पूरी संख्या लिखी गई है। तुम्हें याद होगा बचपन में हम इसे विस्तार से ऐसे लिखते थे –

$4444 = 4000 + 400 + 40 + 4$

यानी दाएँ से पहले स्थान पर 4 का मतलब 4, दूसरे स्थान पर 4 का मतलब 40, तीसरे स्थान पर 400 और चौथे स्थान पर 4000। यह पूरी संख्या यदि प्राचीन मिस्र पद्धति में लिखनी होती तो इस प्रकार लिखी जाती –

यानी हर संकेत को उतनी बार दोहराना पड़ता है जितनी संख्या हम लिखना चाह रहे हैं। सोचो क्यों? इसलिए कि इस तरीके में 10 की हर घात के लिए अलग संकेत होता था। घात जानते हो न?

$10^1 = 10$
$10^2 = 100$
$10^3 = 1000$

आज तो हम ये सभी संख्याएँ लिखने के लिए दो ही संकेतों का उपयोग करते हैं – 1 और 0। लेकिन प्राचीन मिस्र की पद्धति में लिखने के लिए इस तरह 10 के हर घात के लिए अलग संकेत होता था। यानी $10^1 = 10$, $10^2 = 100$, $10^3 = 1000$ आदि के लिए अलग-अलग संकेत। जब 10 की घात पर संकेत बदलता है तो इसका मतलब यह संख्या पद्धति 10 के आधार पर बनी है।

हमारी संख्या पद्धति भी 10 के आधार पर बनी है। पर चूँकि हम स्थानीय मान का उपयोग करते हैं, इसलिए 10 की घात पर संकेत बदलने की हमें ज़रूरत नहीं पड़ती। इसके बदले हम 10 की हर घात पर स्थान बदल देते हैं।

अब समझ रहे हो कि प्राचीन मिस्र की पद्धति में कोई संख्या लिखने के लिए हर संकेत को उतनी बार क्यों दोहराना पड़ता है जितनी संख्या हमें लिखनी होती है?

क्या तुम सोच सकते हो कि स्थानीय मान का उपयोग करने से क्या फायदा है?

बिना स्थानीय मान के उपयोग के चार हज़ार चार सौ चवालिस लिखने के लिए 16 संकेतों का (4 x 4) उपयोग करना पड़ता जबकि स्थानीय मान के उपयोग से यह संख्या 4 संकेतों से ही लिखी गई। सोचो, यदि करोड़ में संख्या लिखनी होती तो कितनी लम्बी हो जाती!

स्थानीय मान का उपयोग करने वाली सबसे पुरानी अंक पद्धति जिसका आज पता है, वह है – बेबीलोन की पद्धति। इस पद्धति में

1 से 9 के लिए निशान

10, 20, 30, 40, 50, के लिए

यानी 59 इस तरह लिखा जाता – 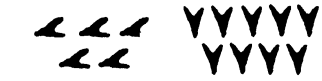

लेकिन 60 के लिए इस प्रकार के 6 निशान उपयोग करने के बजाय स्थान बदलकर (यानी बाएँ स्थान पर, चूँकि बेबीलोन में संख्याएँ दाएँ से बाएँ लिखी जाती थीं) का ही उपयोग किया गया। यानी 81 इस प्रकार लिखा जाता।

यानी 60+10+10+1

यह संख्या पढ़ो –

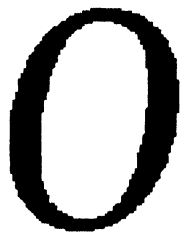

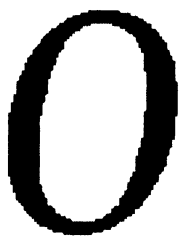

बेबीलोन की इस पद्धति में 60 का आधार माना गया है। इस तरह हमारी दाशमिक पद्धति में दाएँ से पहले स्थान का मान इकाई, दूसरे स्थान का मान दहाई, तीसरे का मान सैकड़ा होता है। उसी तरह बेबीलोन की पद्धति में दाएँ से पहले स्थान का मान इकाई, उसके बाएँ में साठ का स्थान और उसके बाएँ में 60 X 60 = 3600 का स्थान माना जाता था। शायद इसी से दुनिया भर की घड़ियों की इकाई 60 के गुणज की हैं।

बेबीलोन की इस पद्धति में चूँकि 1 से 9 के अलग संकेत नहीं है। इसलिए स्थान बदलते समय ध्यान रखना पड़ता है।

जैसे ही स्थानीय मान का उपयोग होता है, और शून्य के लिए यदि कोई संकेत उपलब्ध न हो तो कुछ संख्याएँ समझने में दिक्कत हो सकती है। खास तौर से ऐसी संख्याएँ जिनमें बीच के स्थानों में कोई अंक न हो। जैसे 123 के लिए 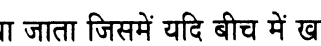 लिखा जाता जिसमें यदि बीच में खाली जगह न छोड़ी जाए तो इसे 5 भी पढ़ा जा सकता है। बेबीलोन में भी शून्य के लिए संकेत था –

पर इसे संख्या के बीच में ही उपयोग करते थे, इकाई के स्थान पर नहीं। इससे भी भ्रम पैदा होता था। जैसे 120 को नहीं, ही लिखा जाता था। ऐसे में संख्या का आगा-पीछा मालूम न हो तो उसे पढ़ना ही मुश्किल हो जाए। संदर्भ से ही पता चल सकता था कि संख्या 120 है कि दो।

भारत में ब्राह्मी लिपि में 2000 साल पहले जो अंक लिखे जाते थे, उन्हें पूरी तरह से दाशमिक स्थानीयमान पद्धति में परिवर्तित करते-करते 600 साल लग गए। यह तभी हो पाया जब शून्य का उपयोग शुरू हुआ।

संख्याएँ, अंक, दाशमिक स्थानीय मान संख्या प्रणाली कुछ सालों में नहीं हज़ारों सालों में विकसित हुई हैं। इनके विकास में कई पड़ाव और बदलावों के कई तकनीकी एवं सामाजिक कारण रहे हैं। संख्या पद्धतियों का विकास गणित के विकास का एक छोटा सा अंश मात्र ही क्यों न हो, वह एक महत्वपूर्ण अंश ज़रूर है। दाशमिक व स्थानीय मान प्रणाली से गणितीय क्रियाओं में जो आसानी हुई है, उससे रोज़मर्रा में उपयोग होने वाली गणित भी आसान हो पाई है।

अब तुम्हीं बताओ, संख्याएँ ऐसे जोड़ना ज़्यादा आसान है ?

C L III	***1 5 3***
+ X X X VI	***+ 3 6***

या ऐसे

यूँ ही मत कह देना। सचमुच इन दोनों संख्याओं को जोड़कर बताना कि कौन-सा तरीका आसान लगा। फिर हमें यह भी लिखना कि गणित की ये कहानी कैसी लगी।

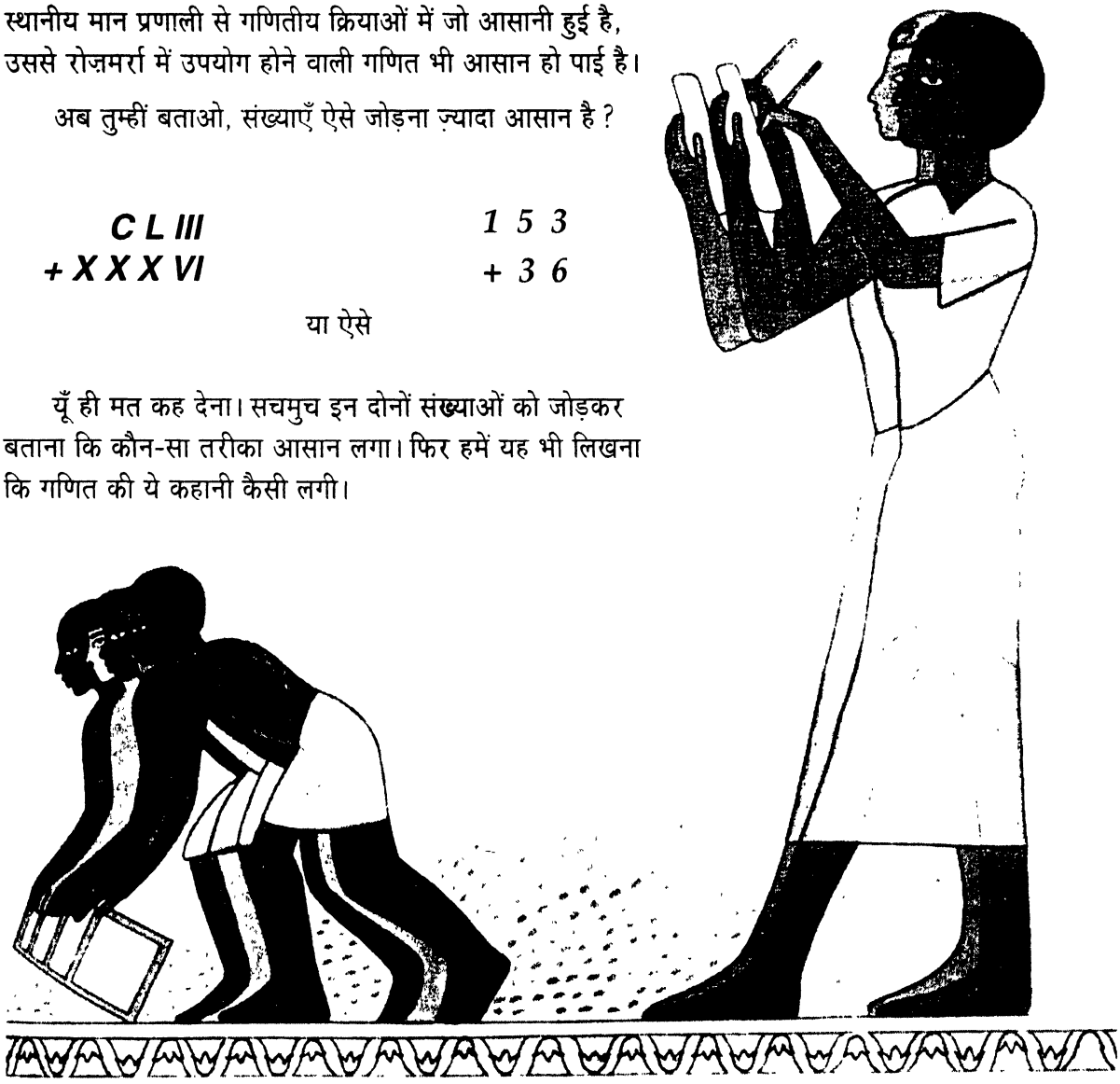

इस लेख में आए चित्र आइविटनेस गाइड्स सीरीज़ की 'राइटिंग' व चाइल्डक्राफ्ट – द हाउ एण्ड वाय लाइब्रेरी सीरीज़ की खण्ड-13 'मैथेमैजिक' से साभार लिए गए हैं।

ले मैं तुझ पर करूँ रज़ाई

क्यों लगते हैं मुझको अच्छे
माँ बोलो तो सुन्दर फूल?
क्योंकि ये भी तो तुम जैसे
नन्हे नन्हे सुन्दर फूल।

अगर रूठ जाता हूँ तुझसे
तो क्यों मुझे मनाती है माँ,
जब रूठूँगी मैं भी तुझसे
तू भी मुझे मनाएगा ना?

ऊँ ऊँ यह क्या तूने तो बस
वही बात ही दोहरा दी माँ?
तू है नया, नई हैं बातें
हुई पुरानी अब तेरी माँ।

माँ बहुत तू भी शैतानू
मुझे हराती रहती है बस।
अरे-कहाँ, तेरी ही बातें
मुझे सुझातीं बातें हैं बस।

[illegible]
नींद बहुत मुझको है आई।
हाँ हाँ रात बहुत है सो जा
ले मैं तुझ पर करूँ रज़ाई।

❑ दिविक रमेश

चित्र : धनंजय

धारावाहिक शृंखला : हमारे शिक्षक ...5

पिछले शिक्षक दिवस पर शिक्षकों के बारे में तुम्हारे जैसे साथियों से बात करते-करते यह सूझा था कि क्यों न हम भी अपने स्कूल जीवन की याद करें, और तुम्हें भी बताएँ अपने शिक्षकों के बारे में। यही सोचकर हमने यह शृंखला शुरू की थी।

इस बार एकलव्य के होशंगाबाद केन्द्र के तीन साथी अपने स्कूल के दिनों को याद कर रहे हैं। हो सकता है, इसे पढ़कर तुम्हें या तुम्हारे घर में किसी को अपने शिक्षक याद आ जाएँ। अगर वह यादें चकमक के और पाठकों के साथ बाँटने लायक लगें तो उन्हें ज़रूर लिख भेजो- इस स्तम्भ के लिए।

सरसुतिया थी वो

काफ़ी पहले की बात है। क़रीब 30 साल पहले की। छठवीं में मेरा दाखिला हुआ, बाबई जिला होशंगाबाद के स्कूल में। गाँव से तीन किलोमीटर रोज़ पैदल चलकर जाते थे। पाँचवीं तक का स्कूल गाँव में था।

हमने हिन्दी मीडियम में पढ़ा था और छठवीं से अंग्रेज़ी की पढ़ाई शुरू होती थी। तीन रूल की कॉपी में अंग्रेज़ी के शब्दों और उनके अर्थों को लिखा दिया जाता था। हमें उन्हें याद करना पड़ता था। रोज़ हर बच्चे से 'सर' मीनिंग पूछते - एक भी अर्थ भूले की हाथ आगे बढ़ाने को कहा जाता और सुताई शुरू। ठंड में ख़ूब ज़ोरों की लगती थी हाथों पर।

इस रूल को सर ने 'सरसुतिया' नाम दे रखा था। वो कहते थे इस सरसुतिया से पिटाई होगी तो सरस्वती आ जाएगी। हाँ, स्कूल से गोल मारने की कोई गुंजाइश नहीं होती थी। क्योंकि सरसुतिया का डर था। गोल मारा कि अगले दिन गुरूजी ने खड़ा किया और सरसुतिया शुरू।

❑ **रामभरोस यादव**

(रामभरोस होशंगाबाद केन्द्र पर अन्य कामों के अलावा बच्चों की गतिविधियों तथा पुस्तकालय में मदद करते हैं।)

शिवेन्द्र पांडिया

मास्टर जी का बेटा

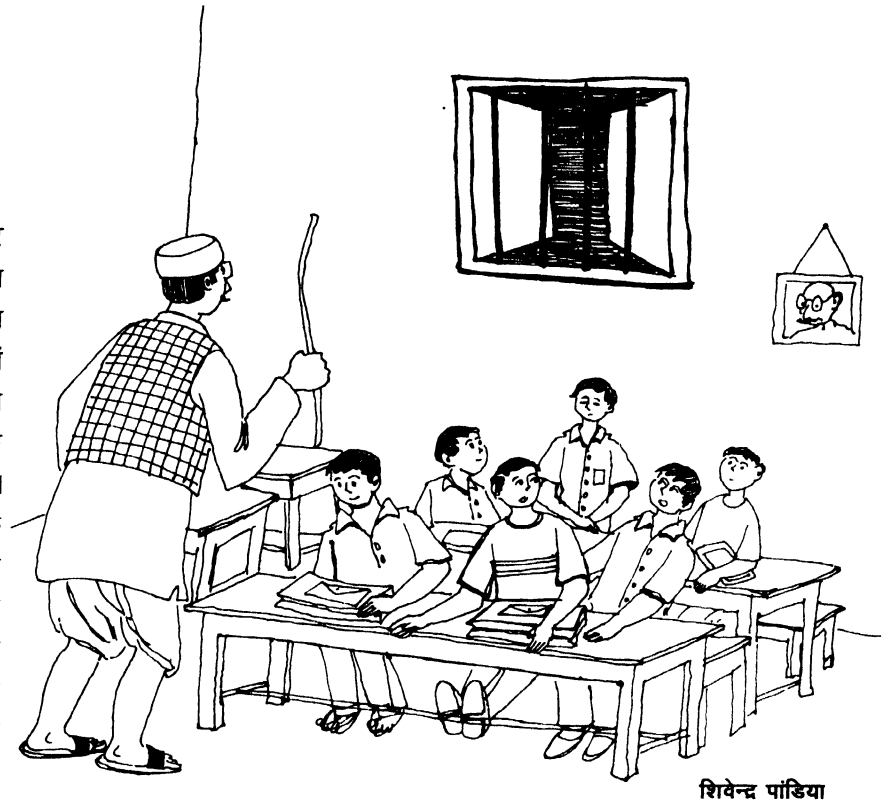

शिवेन्द्र पांडिया

सन् 1979 की बात है - बिहार के एक गाँव की! उस समय मैंने प्राथमिक विद्यालय की चौथी क्लास पास कर पाँचवी क्लास में मिडिल स्कूल संदेश में ही दाखिला लिया था। मैं अपनी क्लास में सबसे छोटा लड़का था। मेरे पिता जी ख़ुद प्राथमिक विद्यालय संदेश में ही प्रधानाध्यापक के पद पर लगभग 25 वर्षों से आसीन थे। अतः मेरे पिता जी ने कुछ शिक्षकों को बता दिया था कि मेरे लड़के ने आपके स्कूल में, पाँचवीं में दाखिला लिया है। वह छोटा है, अतः कृपया उस पर ध्यान दें। फरवरी के महीने में क्लास शुरू हुई। बिहार में शिक्षा सत्र जनवरी से दिसम्बर तक का होता है।

स्कूल शुरू होने के लगभग दस-पन्द्रह दिन के बाद की बात है। एक शिक्षक 'लाला जी' (पूरा नाम याद नहीं है) अंग्रेज़ी पढ़ाते थे। हिन्दी माध्यम स्कूल था। हमें अंग्रेज़ी तो A B C D और One, Two के अलावा कुछ भी नहीं आती थी। एक दिन अंग्रेज़ी शिक्षक लाला जी ने दस अंग्रेज़ी के शब्द लिखवाए तथा दूसरे दिन उन्हें अपने घर से याद करके आने को कहा। मैंने याद नहीं किए। मुझे लगभग एक या दो ही मीनिंग याद थे। वह भी लिखते समय याद हो गए थे। लेकिन मीनिंग के अलावा उनकी स्पेलिंग भी याद करना थी।

मैं स्कूल में सबसे छोटा होने के कारण अपनी कक्षा की पहली बैंच पर बैठता था। अधिकतम लड़के पहली बैंच पर बैठना चाहते थे। अतः कभी-कभी मुझे पीछे बैठना पड़ता था।

उस दिन स्कूल में इसी कारण मुझे पीछे ही बैठना पड़ा। वैसे भी मुझे मीनिंग भी याद नहीं थे। उस दिन लाला जी ने बेशर्म (हमारे यहाँ इसे हेहर बोलते हैं) की चार छड़ी मँगवाईं। उसी छड़ी से चार छड़ी हाथ पर बजी। वह पहला दिन था जब मैं अपने जीवन में या मिडिल स्कूल में, पहली बार अपने शिक्षक से इतना पिटा। इसका कारण यह था कि मैं शुरू से ही अपने पिता जी के स्कूल में पढ़ा था। प्रधानाध्यापक का पुत्र होने के नाते अपने पिता जी के अलावा और किसी भी शिक्षक से डॉट के अतिरिक्त कभी सज़ा नहीं मिली थी।

पिटाई के बाद लालाजी ने पूछा कि, 'रामनिवास तिवारी का लड़का कौन है? इसी क्लास में पढ़ता है न?' लगभग आधे से अधिक छात्र मुझे पहचानते थे जो हमारे साथ ही पढ़कर चौथी से पाँचवीं में आए थे। छात्रों ने कहा, 'हाँ, यह है संजय।'

अब मैं शर्म से गड़ा जा रहा था। क्योंकि मैंने इंग्लिश के मीनिंग भी याद नहीं किए और माससाहब यदि पिताजी से बोलेंगे तो घर में और भी पिटाई शुरू हो जाएगी।

❑ **संजय तिवारी**

(संजय एकलव्य के सामाजिक अध्ययन कार्यक्रम में कार्यरत है। इन दिनों वे बच्चों के लिए बन रहे एटलस पर काम कर रहे हैं।)

पृथ्वी गोल है!

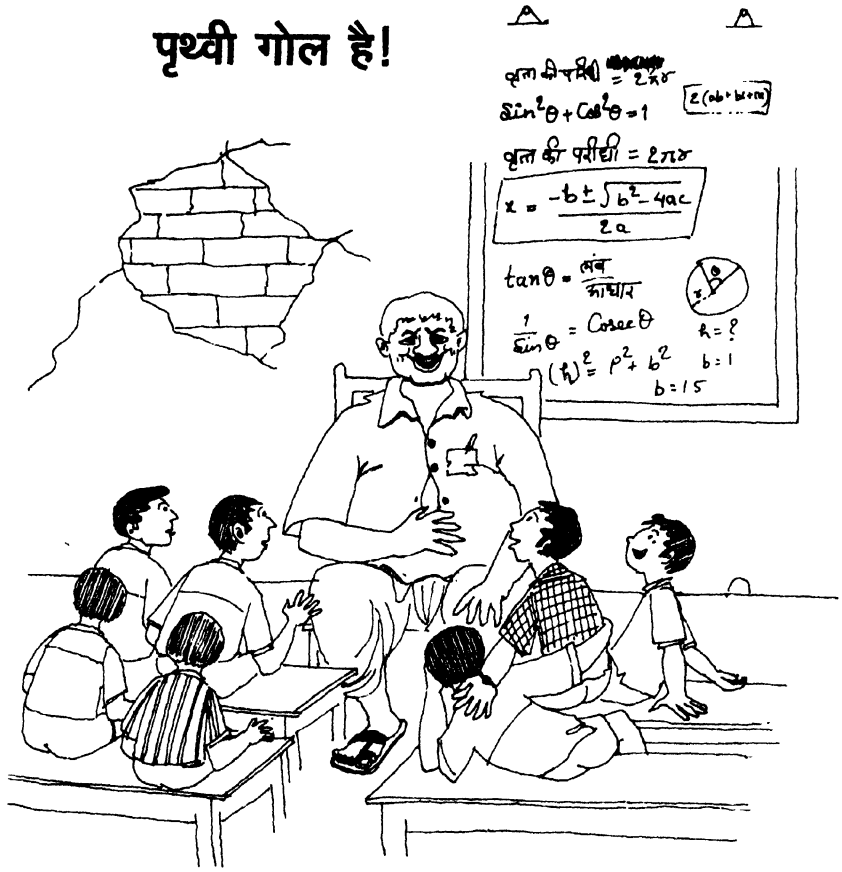

शिवेन्द्र पांडिया

ग्यारहवीं कक्षा में यादव जी हमें इंग्लिश विषय पढ़ाते थे। उनकी कक्षाएँ आज भी याद होने की वजह है- यादव जी की कक्षा में आप पाठ्यक्रम के बाहर की चर्चा भी उनसे कर सकते थे।

अक्सर सोमवार को गणित के तीन तूफानी पीरियड झेलने के बाद हम लोग लगभग लस्त पड़ चुके होते थे। ऐसे समय यादव सर का चौथा पीरियड काफ़ी सुकून देने वाला होता था। एक हट्टा-कट्टा सफ़ेद बालों वाला हँसमुख व्यक्ति, अपनी बड़ी-सी तोंद पर हाथ फेरता हुआ आता था। और फिर कुर्सी पर बैठकर तोंद पर हाथ रखकर कहता था, 'पृथ्वी गोल है।'

कभी मन हुआ तो पाठ्य-पुस्तक का पाठ पढ़ा दिया। नहीं तो निबंध लिखवा दिया, या कक्षा में लड़कों के मनपसंद विषय पर चर्चा करने बैठ गए। उनके साथ चर्चा करने में मज़ा आता था। लड़के भी निर्भीक होकर अपनी बात कहते थे। चर्चा का कोई भी विषय हो सकता था। जैसे, रूस-अमरीका का शीत युद्ध, स्टारवार, चीन में शासन व्यवस्था, अपने शहर के गणमान्य नागरिकों का कच्चा-चिट्ठा, किसी फ़िल्म पर चर्चा, भारत-पाकिस्तान सम्बंध, कश्मीर का मुद्दा, विकसित देशों में विभिन्न सुविधाएँ, अपने स्कूल का इतिहास इत्यादि।

ऐसा नहीं था कि चर्चाएँ सिर्फ सोमवार को ही होती थीं। लड़कों का जिस दिन पढ़ने का मन नहीं होता था उस दिन वे अख़बार की किसी सुर्खी से मुद्दा बनाकर उन्हें उलझा देते थे। और सर भी मज़े से उलझकर चालीस मिनट का पीरियड ख़त्म होने देते थे। लेकिन पीरियड ख़त्म होने पर तोंद पर हाथ फेरते हुए कहते थे, 'ऐसा मत सोचना कि तुमने मुझे फँसा लिया है, बल्कि तुमने अपना एक पीरियड गँवा दिया है जो चाहकर भी वापस नहीं आएगा। अपना क्या है अपना तो मूलमंत्र ही यह है- जितना पैसा उतना काम।'

❑ **माधव केलकर**

(माधव एकलव्य की द्वैमासिक पत्रिका शैक्षिक सन्दर्भ में कार्यरत हैं।)

मेरा पन्ना

गधा

गधे का नाम सुनकर लोग,
हँसकर लोट-पोट हो जाते हैं।
गधा-गधा कहकर दूसरों को,
उनका मज़ाक उड़ाते हैं।
जब वह रैंकता है तब,
हँसकर पेट फूल जाता है।
पर गुस्सा में जब मारे दुलत्ती,
होश ठिकाने आ जाता है।
दिन भर मेहनत करता है,
रोज़ सवारी बोझा ढोता है।
दूसरों की मदद करके वह,
जीवन की नाव चलाता है।
पर जब वह पीटा जाता है,
तब अकड़कर ढीठ हो जाता है।
ऐसा वह तब करता है,
जब उस पर अत्याचार होता है।
भोजन ठीक से नहीं मिलता तो,
तब भी वैसा करता है।
इस तरह वह मनुष्यों को,
अपना महत्व बताता है।

● के. रामदास, लोयाबाद, धनबाद, बिहार

रचना चौरसिया, सातवीं, (पता नहीं लिखा)

फूल – पत्ती

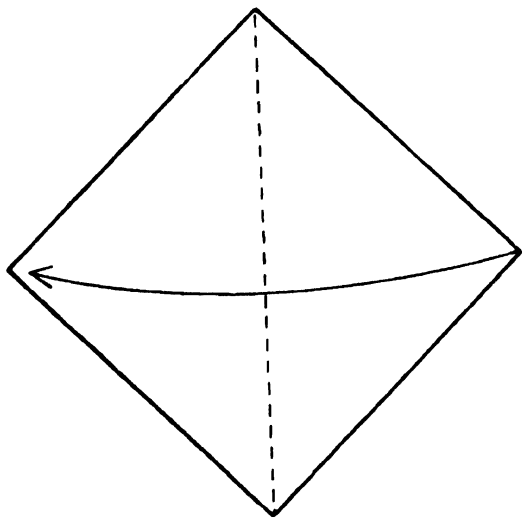

एक वर्गाकार काग़ज़ लो। इसे टूटी रेखा पर से मोड़ लो। मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।

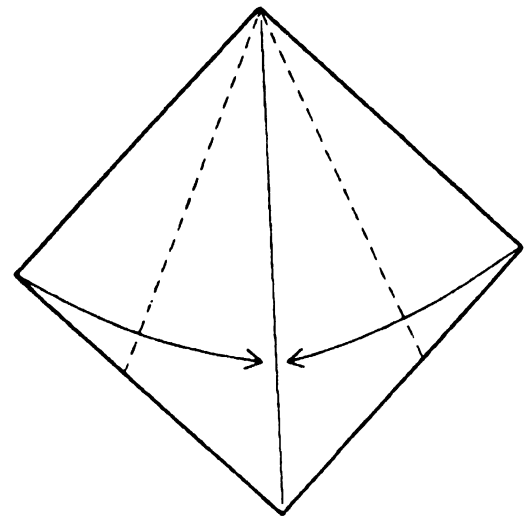

2. अब चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।

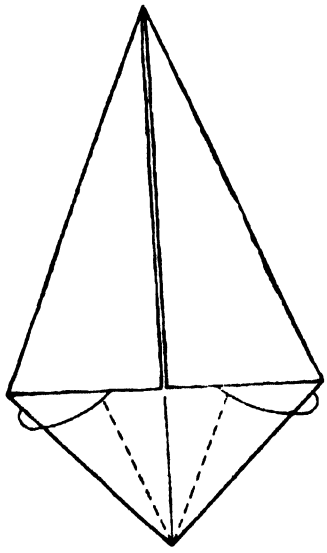

3. इस तरह की आकृति बनेगी। अब चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

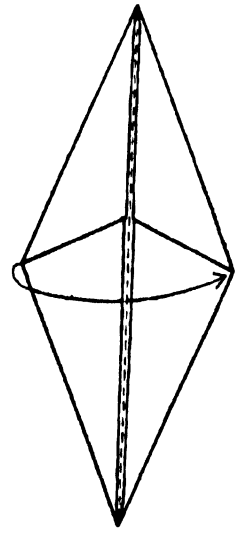

4. इस तरह की आकृति बन गई। अब इसे बीच से मोड़ लो।

5. इस तरह। यह बन गई पत्ती। इस तरह की और एक पत्ती बना लो।

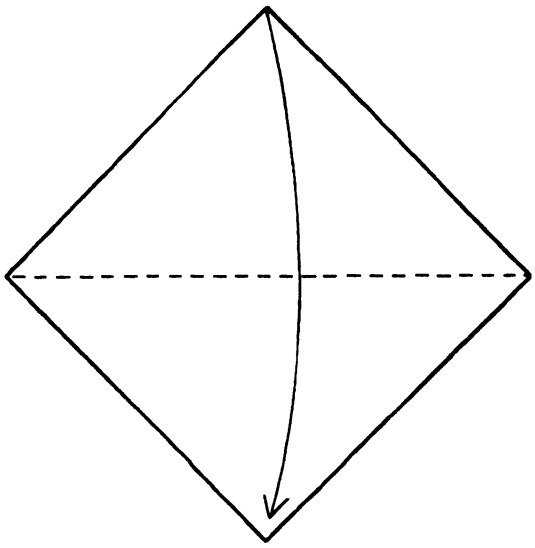

1. एक वर्गाकार काग़ज़ लो। इसे टूटी रेखा पर से मोड़ लो।

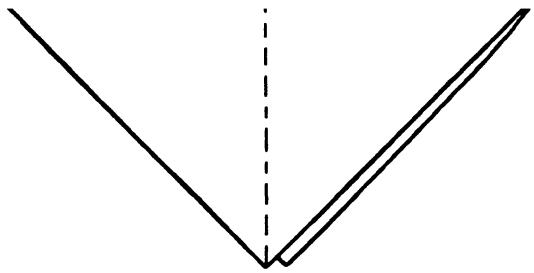

2. इस मुड़े हुए काग़ज़ को टूटी रेखा पर से मोड़ कर खोल लो।

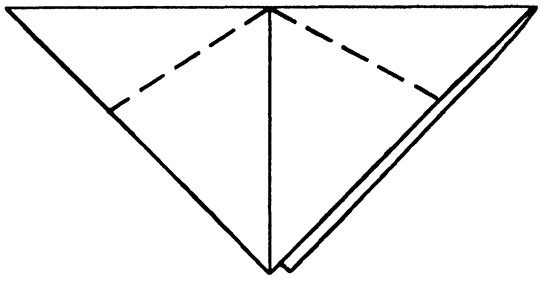

3. अब टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ।

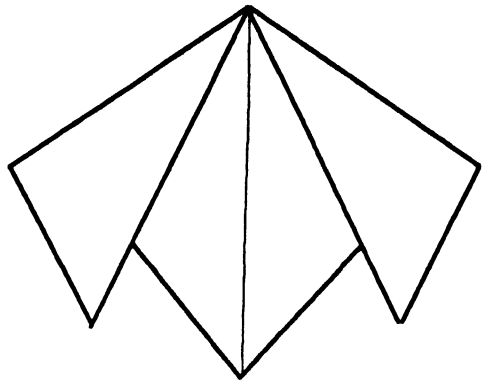

4. इस तरह की आकृति बनेगी। इसे पलट लो।

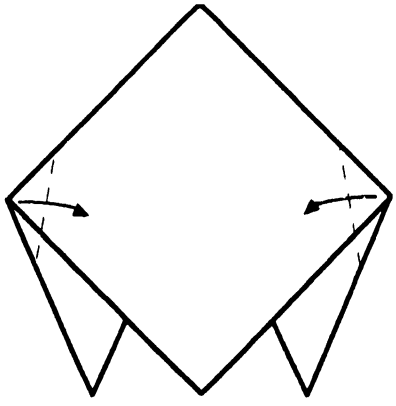

5. इस चित्र में दिख रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बना लो। फिर आकृति को पलट लो।

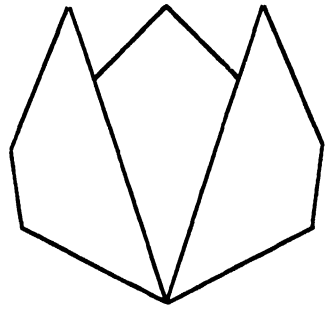

6. इस तरह। यह तुम्हारा फूल बन गया। अब इस फूल को दोनों पत्तियों के बीच रखकर एक कार्ड पर चिपका लो। कैसा रहा फूल – पत्ती वाला कार्ड?

जश्ने-बचपन : एक अनुभव

❑ कविता सुरेश

10 से 19 नवम्बर 1998 तक दिल्ली में बच्चों के नाटकों का समारोह हो रहा था। इस समारोह में चकमक की ओर से मैं भी शामिल हुई, लेकिन सिर्फ़ 18 और 19 तारीख़ के नाटक देखने का ही मौका मिल पाया।

'तुलसी - तुलसी' का एक दृश्य।

यह समारोह जिसका नाम **'जश्ने-बचपन'** रखा गया था, **राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली** की ओर से संस्कार रंग टोली ने आयोजित किया था। संस्कार रंग टोली (थियेटर इन एजूकेशन कम्पनी) **टाई** की शुरूआत अक्टूबर 1989 में हुई थी। यह कम्पनी राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का ही एक अंग है। इसका मुख्य काम है बच्चों के साथ और बच्चों के लिए नाटक करना।

18 तारीख़ को दिल्ली पहुँचते ही हम सीधे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय पहुँचे। हमारे रुकने की जगह का इतंजाम होने में थोड़ा वक़्त लग रहा था, उसी बीच टाई के इन्चार्ज अब्दुल लतीफ खटाना से हमारा परिचय हुआ। लतीफ जी ने टाई के बारे में बताया।

यह टोली मुख्य रूप से दिल्ली में अलग-अलग आयु वर्ग के बच्चों की भाषा, उनकी मानसिकता एवं रूचियों के अनुसार नाटक तैयार करती है। इसके अलावा विभिन्न विषयों पर नाटक कार्यशालाएँ आयोजित करती है-बच्चों के लिए भी और अध्यापकों के लिए भी। टोली के नाटकों के प्रदर्शन थियेटर हाल में तो होते ही हैं, साथ ही स्कूलों में भी करते हैं।

नाटकों के विषय आमतौर पर सामाजिक और विद्यालय के पाठ्यक्रम से सम्बंधित होते हैं। इन नाटकों का उद्देश्य है बच्चों को प्रश्न पूछने, निर्णय लेने तथा विभिन्न स्तरों पर स्वयं की मदद करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करना।

संस्कार रंग टोली के बारे में बातचीत करते करते समय हो गया पिछले दिन हुए नाटक पर चर्चा सत्र का। हमने 17 तारीख़ का नाटक देखा तो नहीं था लेकिन इस चर्चा को सुनने हम भी बैठ गए।

17 नवम्बर को दिल्ली की ही संस्था **'खिलौना'** ने **'द क्लाउंस क्राय फॉर द मून'** नाटक का प्रदर्शन किया। यह संस्था बच्चों के लिए नाटक करती है और नाटकों के प्रदर्शन स्कूलों में भी करती है। 'खिलौना' की मान्यता है कि बच्चे नाटक सिर्फ़ देखें ही नहीं बल्कि प्रदर्शन के दौरान उसमें खुद भी शामिल हों। इसी तरह का यह नाटक उन्होंने 'जश्ने-बचपन' में किया।

चर्चा सत्र में यह बात उभर कर आई कि इस नाटक में प्रदर्शन के दौरान नाटक के पात्र दर्शकों से

बातचीत करते हैं। कुछ स्थितियों में ऐसा भी होता है जबकि पात्र आगे क्या करें यह दर्शकों से पूछते हैं। दर्शकों के दिए सुझाव और दर्शकों में से किसी के नाटक में भाग लेने पर नाटक आगे बढ़ता है।

चर्चा में भाग लेने वाले लोगों के विचार सुनकर यह अहसास हुआ कि हम एक अच्छा नाटक देखने से चूक गए।

अब तक हमारे ठहरने की व्यवस्था हो चुकी थी सो हम सामान लेकर होटल पहुँच गए।

शाम को 'जश्ने-बचपन' का नौवाँ नाटक प्रदर्शित होना था। जम्मू की **'नटरंग'** नाम की संस्था द्वारा **'आप हमारे हैं कौन'** का मंचन हुआ। 'नटरंग' के बाल विभाग द्वारा बच्चों के नाटक तैयार किए जाते हैं। इसके द्वारा बच्चों और शिक्षकों के लिए कार्यशालाएँ भी आयोजित की जाती हैं।

'आप हमारे है कौन' में लगभग 20 से 22 बच्चों ने पूरे समय मंच पर रहकर विभिन्न दृश्य दिखाए। इस नाटक में बच्चे आपस में बातचीत करते हैं, उन सारे विषयों पर जो उनके जीवन से संबंध रखते हैं। जो कुछ वो अपने आसपास देखते हैं, उसे जैसा महसूस करते हैं वैसा दिखाते हैं। बच्चों से माता-पिता की, शिक्षकों की और पूरे समाज की अधिक से अधिक अपेक्षाएँ करने को नाटक के कलाकारों ने उसी तरह दर्शाया जैसा वे खुद उसे महसूस करते होंगे।

एक दृश्य में स्कूल की एक कक्षा दिखाई गई। जिसमें शिक्षिका बच्चों की हाजिरी ले रही हैं। दो बच्चों के नाम के बाद तीसरे का नाम पुकारती हैं, तो एक बच्चा उठकर कहता है, "मैडम वो तो आपके घर के लिए गैस का सिलेंडर लेने गया है।"

फिर दो-तीन बच्चों के नाम के बाद एक और नाम ऐसा आता है जिसके बारे में कोई बच्चा कहता है, "मैडम वो आपके जूते सुधरवाने गया है।"

स्कूल की व्यवस्था-अव्यवस्था का यह दृश्य काफ़ी लम्बा था। इसमें स्कूलों में घटने वाली कई घटनाएँ दिखाई गईं। हालांकि कई बातें दोहराव के कारण अपना प्रभाव कम छोड़ती हैं।

एक और दृश्य में माता-पिता अपने बच्चों से अपेक्षा करते हैं कि वे आगे चलकर क्या करें, क्या बनें। जबकि बच्चों का मन कुछ और काम करने का है। बच्चों से अत्यधिक अपेक्षाएँ और अपने मन से उन्हें काम करने की छूट न देने का यह दृश्य बहुत ही सुन्दर तरीके से प्रस्तुत किया गया।

एक और दृश्य में बच्चे अपने माता-पिता, रिश्तेदार और शिक्षक से पूछते हैं कि 'मैं कौन हूँ'। जवाब मिलता है - 'तुम मेरी बेटी हो' और 'तुम मेरे छात्र हो।' यहाँ बच्चे एक सवाल छोड़ते हैं, 'क्या हमारी अपनी कोई पहचान नहीं?'

नाटक में बच्चे शिक्षकों, माता, पिता, रिश्तेदारों और शिक्षा नीति बनाने वालों से पूछते हैं कि, 'आप जो हमसे इतनी अपेक्षाएँ रखते हैं हमारे लिए क्या कर रहे हैं? आप हमारे हैं कौन?'

दूसरे दिन सुबह इस नाटक पर चर्चा सत्र में बच्चों (नाटक के कलाकारों) ने बताया कि जो दृश्य इस नाटक में दिखाई देते हैं वे उनमें से किसी न किसी के निजी अनुभव हैं।

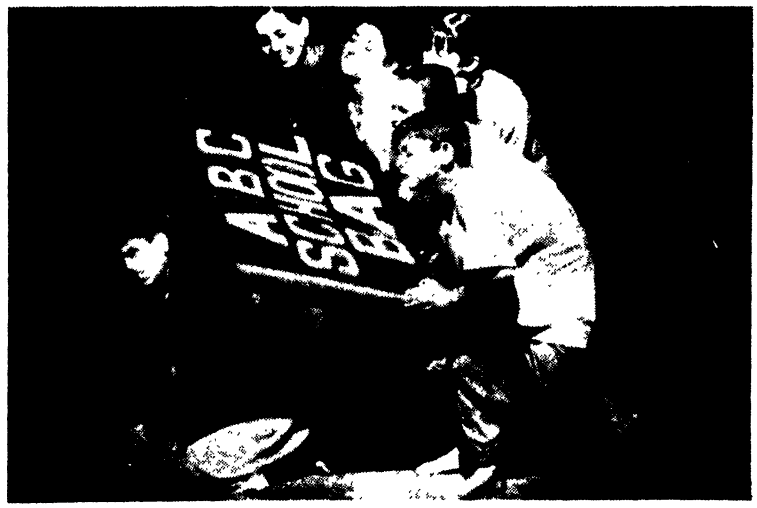

'आप हमारे हैं कौन' का एक दृश्य।

नाटक देखने के बाद उस पर कई तरह की प्रतिक्रियाएँ होती हैं। इनके बारे में नाटक में काम करने वाले बच्चों

जश्ने - बचपन में ये नाटक प्रस्तुत किए गए

	नाटक का नाम	प्रस्तुत करने वाला समूह
	तुलसी - तुलसी	संस्कार रंग टोली, दिल्ली
	चमत्कार होकर रहेगा	साहित्य कला मंडल, मुम्बई
	पुष्पारानी	किन्नर मेला, कर्नाटक
	केयर कोरी ना	सूत्रपात, कलकत्ता
	खेल-खिलौना	रंग विदूषक, भोपाल
	पण आम्हाला खेलायचय	डी.ए.टी.ई. पुणे
	महाराष्ट्र अमुचा	नाट्यशाला, मुम्बई
8.	द क्लाउन्स क्राई फॉर द मून	खिलौना, दिल्ली
9.	आप हमारे हैं कौन	नटरंग, जम्मू
10.	स्वाधीनता संग्राम	उमंग, दिल्ली

ने अपने कुछ अनुभव बताए। एक बच्चे ने कहा, नाटक देखने के बाद मेरे पिता जी ने मुझसे पूछा, 'क्यों, हम तो तुम्हारे साथ ऐसा कुछ नहीं करते न?'

एक अन्य कलाकार ने बताया कि जब उसने नाटक के लिए स्कूल से छुट्टी माँगी तो उसकी टीचर ने कहा, 'कोई छुट्टी नहीं मिलेगी, हमारे ख़िलाफ नाटक करते हो। तुम्हें जाना है अपनी ज़िम्मेदारी पर जाओ।'

इस नाटक के निर्देशक का कहना था कि नाटक की स्क्रिप्ट बच्चों ने स्वयं विकसित की है और वे समय-समय पर उसे बदलते भी रहते हैं।

19 नवम्बर को 'जश्ने-बचपन' की आख़िरी रंग प्रस्तुति थी-श्रीमती रेखा जैन का नाटक **'स्वाधीनता संग्राम'**। इस नाटक में लगभग 100 बच्चों ने स्वाधीनता संग्राम के विभिन्न दृश्य प्रस्तुत किए। रेखा जी का मानना है कि देश की स्वाधीनता के लिए होने वाले लम्बे संघर्ष की ऐसी झाँकी प्रस्तुत की जाए जो छोटे बच्चों की चेतना के अनुकूल हो और वे उससे कुछ सीख सकें।

इसी नाटक के साथ यह 'जश्ने-बचपन' भी सम्पन्न हो गया। और उसी रात को हम वापस भोपाल की ओर आने वाली गाड़ी में बैठ गए। ❑

फोटो टाई के सौजन्य से।

माथापच्ची : हल नवम्बर, 98 अंक के

1) बाकी छह बच्चों के नाम इस प्रकार हैं –
लता, कामिनी, नीता, रमा, मरिया, माया

2)

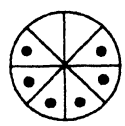

3)

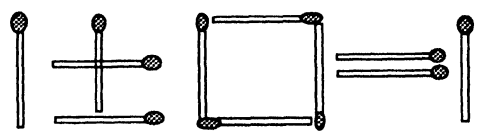

4)

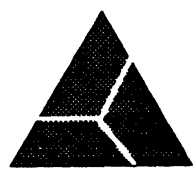

5) नानू के पास एक कुत्ता व एक बिल्ली हैं।

6) ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डरना।

7) चार टुकड़ों में दो तरफ बाड़ लगी रहेगी, आठ में एक तरफ और चार में एक भी तरफ बाड़ नहीं होगी।

8) दोनों में से एक के मुँह पर कालिख लगी थी, दूसरे की नहीं। साफ़ मुँह वाले ने काले मुँह वाले को देखकर सोचा कि मेरा मुँह भी काला होगा, इसलिए वह मुँह धोने चला गया। काले मुँह वाले ने साफ़ मुँह वाले को देखकर सोचा कि मेरा मुँह भी साफ़ होगा और सीधे काम पर चल दिया।

वर्ग पहेली - 89 का हल

आ	ग	ब	बू	ला	■	अ	बी	र
म	■	र	■	र	ह	नु	म	■
द	र	ब	र	■	■	मा	■	दी
नी	■	टी	स	■	छा	न	बी	न
■	चा	■	दा	■	त्रा	■	ज	■
कि	र	दा	र	■	वा	ह	■	उ
ला	■	ल	■	■	स	म	त	ल
■	का	रो	बा	र	■	रा	■	फ
बा	ल	टी	■	ज	वा	ह	रा	त

वर्ग पहेली - 89 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं - मनीष गुप्ता, भग्यापुर, खरगोन; दशरथ गुप्ता, योगेश कुमार टेलर, राजपुर, बड़वानी; मधुमिता यादव, मरवाही, बिलासपुर; अंशु सिंगारे, सारणी, बैतूल; सच्चिदानन्द मिश्र, बेलियाखेड़ी, शहडोल; रविकान्त मित्तल, ब्यावरा (राजगढ़); लोकेश्वर एवं हृषिकेश सिंह सिदार, देवगढ़, घरघोड़ा, रायगढ़। सभी म.प्र.। इन्हें चकमक का फ़रवरी 1999 का अंक उपहार में भेजा जा रहा है।

बिल्ली

मेरी बिल्ली बड़ी सयानी
करती है बड़ी शैतानी
कुत्ते को देखकर डर जाती है
शेर की मौसी कहलाती है
शान से वो इतराती है
झट यह पलंग पर चढ़
मेरे पास आती है
म्याऊँ म्याऊँ करके वह
सबके मन को मोह ले जाती है
गोल-गोल आँखें मटकाकर
रफूचक्कर हो जाती है

● आकाश भारद्वाज, रावतभाटा,चित्तोड़, राजस्थान

खेत का मालिक

बहुत समय पहले की बात है जब मैं तीन साल की थी। गाँव में मेरे मामा रहते थे। वहाँ मैं और मेरी बहन और मेरे मामा के बच्चे, हम लोग हमारे खेत पर गए। वहाँ पर हमने बहुत उम्बी खाई। पास में ही एक और खेत था, उस खेत में मूँगफली लग रही थी। हमने उस खेत में जाकर मूँगफली खाई। अचानक उस खेत का मालिक आ गया। हम सब भाग निकले। मेरी बहन कीचड़ में फँस गई।
मालिक ने उसे पकड़ लिया।
और चिल्लाने लगा। फिर मेरी बहन भी वहाँ से भाग निकली।
फिर हम घर वापस आ गए।
यह बात हमने हमारे मम्मी पापा को बताई। मम्मी ने हमें बहुत मारा।

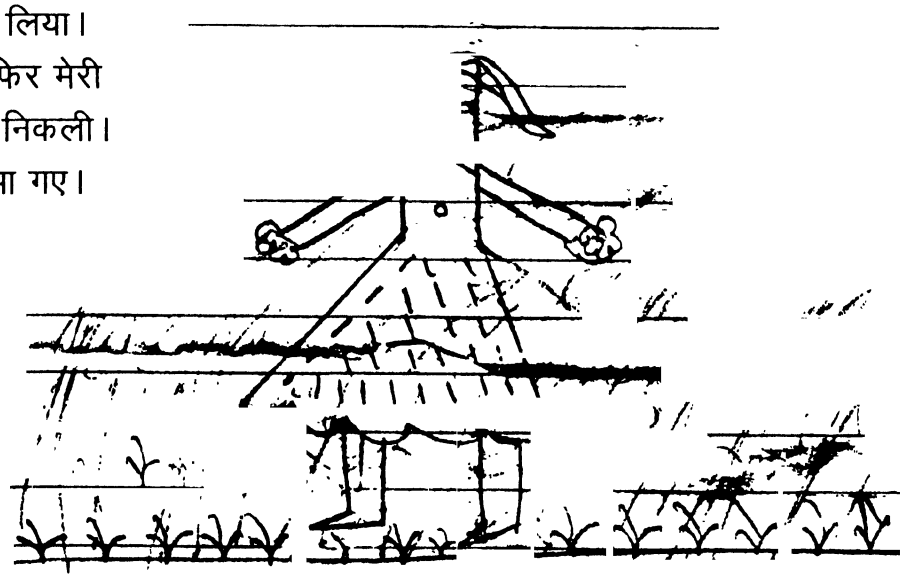

चित्र और रचना
परवीन खान, आठवीं,
धार, म.प्र.

स्कूल में मिलने वाली **सज़ाओं** के बारे में कुछ बच्चों की राय। तुम भी पढ़ो।

हमारे यहाँ होमवर्क नहीं करने पर सज़ा नहीं मिलती, लेकिन क्लास में बात करने पर सज़ा मिलती है।

जब कभी कॉपी में ग़ल्ती हो जाती है तो शिक्षक कॉपी फेंककर मारते हैं। बच्चों से तो ग़ल्ती हमेशा ही होती है। कॉपी चेक करना तो उनका फर्ज़ है। हमारे पास भी कुछ अधिकार होने चाहिए।

हमें भी पढ़ाई की थोड़ी आज़ादी होना चाहिए। नियम के अनुसार खेलने को नहीं मिलता। जब मन होता है तब शिक्षक अलग-अलग विषय पढ़ाते हैं। जब इनको इसकी आज़ादी है तो हम बच्चों को भी आज़ादी होना चाहिए।

हमारी टीचर तो हमें कभी नहीं मारती, हाँ डाँटती ज़रूर हैं वो भी क्लास में बात करने पर।

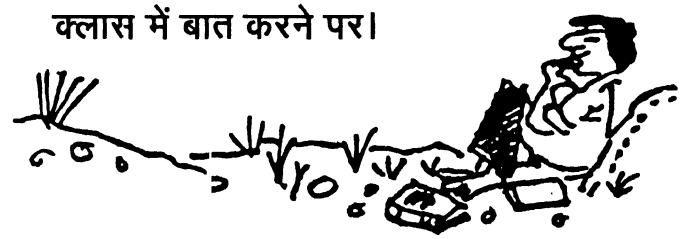

प्रश्न उत्तर याद करके आने को कहा जाता है। लेकिन जब समझाने की बात उठाई जाती है तो शिक्षक कहते हैं कि हमारा फर्ज़ तो लिखवाना था सो हमने लिखवा दिया।

कोई गलती होने पर क्लास में खड़े होने की सज़ा मिलती है। दुबारा फिर कोई गलती पर क्लास से बाहर निकाल देती हैं टीचर। लेकिन क्लास से बाहर खड़े होना हमें अच्छा लगता है, हम तो बाहर खड़े होकर मस्ती करते हैं।

चित्र -सबीना सबरवाल

हमारी टीचर हमारे कान पकड़कर ऐसे मरोड़ती हैं जैसे घड़ी में अलार्म लगाते समय चाभी को घुमाते हैं।

होम वर्क नहीं करके ले जाने पर टीचर क्लास में खड़े रहने की सज़ा देती हैं। कभी-कभी स्केल से पिटाई भी करती हैं।
काम पूरा नहीं करके ले जाएँगे तो सज़ा तो मिलेगी ही। लेकिन पिटाई नहीं होना चाहिए।

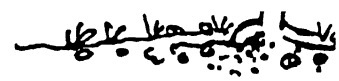

बाकी चित्र : 'चाय की प्याली में पहेली' से साभार।

गजेन्द्र पटेल, ज्योति शर्मा, अंकित, अरुणाभ, हेजीब, इन्द्रजीत चौधरी, अंकित मालवी; सेंट जॉन स्कूल, हरदा,म. प्र.; राजलक्ष्मी, महिमा; सेंट जोसेफ को-एड स्कूल; सृष्टि, सेंट जोसेफ कॉन्वेंट स्कूल; प्रणव, अंकित, कबीर, महर्षि विद्या मंदिर; भोपाल

वर्ग पहेली - 91

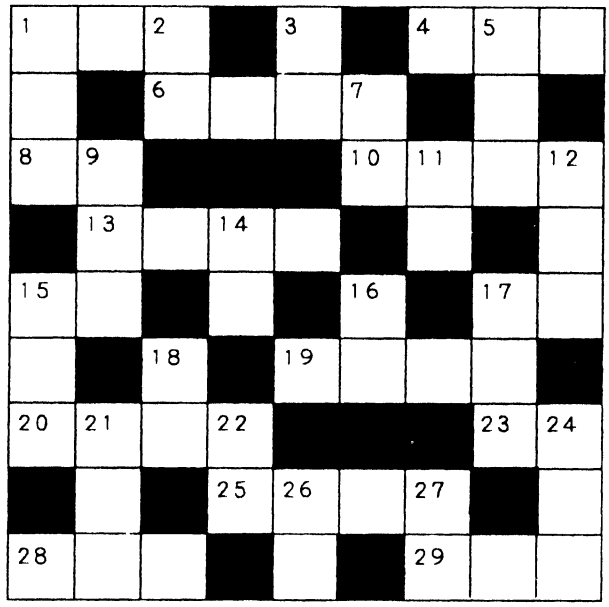

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. शरीर से निकलता है, ख़ासकर गर्मी में (3)
4. चंचल, फुर्तीला (3)
6. तुम्हारे हाथ में यही तो है (4)
8. गाल की उलटफेर में शरीर का एकऔर अंग (2)
10. रसदार मुखिया (4)
13. अपनी तहज़ीब के लिए प्रसिद्ध एक शहर (4)
15. जो झूठ नहीं है (2)
17. पतवार में है पंख (2)
19. फैलना (4)
20. घर में आने का रास्ता (4)
23. नाम की उलट-पुलट में आदर (2)
25. जिसके पास माल हो (4)
28. मध्य प्रदेश का पड़ोसी प्रदेश (3)
29. रात के बाद होता है (3)

रविकांत मित्तल, ब्यावरा, राजगढ़ द्वारा भेजी पहेली।

संकेत : ऊपर से नीचे

1. कभी न कभी आकाश में उड़ाया होगा इसे (3)
2. उल्टा चना नृत्य करे (2)
3. हमेशा मज़ा है, संध्या में (2)
5. ओट है परदादा में (3)
7. तानने या खींचने का भाव (2)
9. कहते हैं कि यह बुरी बला है (3)
11. रीति-रिवाज (2)
12. खबरदार नरम है (3)
14. उल्टी शान (2)
15. एक वाद्य-यंत्र (3)
16. तुम्हारी माँ की माँ तुम्हारे पिता की क्या है? (2)
17. एक प्रसिद्ध नहर (3)
18. उल्टा वादा (2)
21. एक मिठाई (3)
22. भारत की एक प्रसिद्ध मस्जिद (2)
24. राजा न देखना दृश्य (3)
26. होंठ (2)
27. सिर कटा 'असर' उल्टा (2)

ये गुलाब के सुन्दर फूल!

अक़्सर सपनों में आए हैं,
कानों में कुछ कह जाए हैं,
रह-रह जादू-से बन जाएँ,
ये गुलाब के सुन्दर फूल!

करें इशारे पास बुलाएँ,
फिर 'टा टा' कहकर छिप जाएँ,
छिपे पत्तियों में इतराएँ,
ये गुलाब के सुन्दर फूल!

सारे रंग निछावर इन पर,
सारे गंध निछावर इन पर
आओ, हम भी बलि-बलि जाएँ,
ये गुलाब के सुन्दर फूल!

साँसों में सरसा लें इनको,
प्राणों पर बरसा लें इनको,
जाने अब फिर कब मिल पाएँ,
ये गुलाब के सुन्दर फूल!

❑ दामोदर अग्रवाल

माथापच्ची

(1)

हरिया ने अपने पड़ोसी किसान लखीराम से कहा, "अगर तुम अपनी ज़मीन में से सात एकड़ मुझे बेच दो तो मेरी ज़मीन तुम्हारी ज़मीन से दुगुनी हो जाएगी।"

लखीराम ने जवाब में कहा, "पर मैं ऐसा क्यों करूँ? बल्कि तुम्हें अपनी ज़मीन में से सात एकड़ मुझे बेच देना चाहिए। इससे हम दोनों की ज़मीन बराबर हो जाएगी और हम दोनों भाई-भाई की तरह रहेंगे।

कितनी-कितनी ज़मीन है दोनों के पास?

(2)

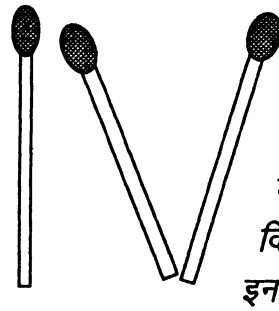

यहाँ तीन माचिस की तीलियाँ हैं। इनमें तीन और मिलाकर कुछ ऐसा करो कि 9 की संख्या लिखी हुई दिखे। ख़्याल रहे कि हमें इन तीन तीलियों को हटाने या हिलाने की कोई छूट नहीं है।

(3)

पाँचवीं घड़ी में क्या समय हो रहा होगा? बाकियों को देखकर पता लगाओ।

(4)

इस चित्र में हर आड़ी और खड़ी लाइन का आख़िरी चित्र किसी क्रमानुसार पहले दो चित्रों की मदद से बना है। क्या तुम इस क्रम को ढूँढकर आख़िरी लाइनों के आख़िरी चित्र के बारे में कुछ बता सकते हो कि वह कैसा बनेगा?

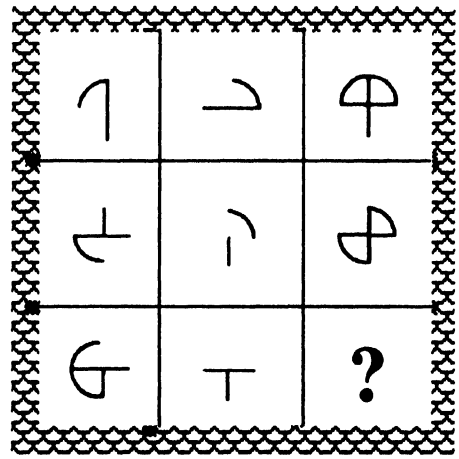

(5)

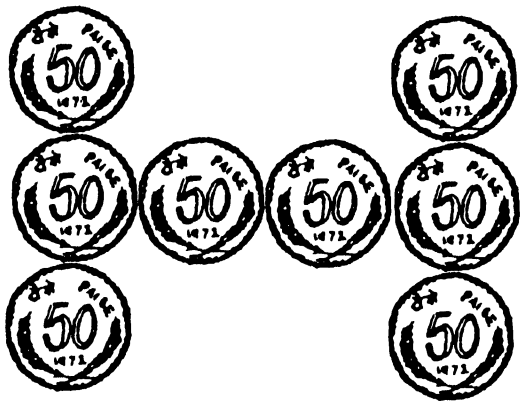

आठ सिक्के इस तरह एक **H** की आकृति में जमे हुए हैं। इनमें सिर्फ़ पाँच सिक्कों को सरकाकर हमें इन्हें ऐसे जमाना है कि आकृति वर्ग जैसी बन जाए।

सिक्के को सरकाने का मतलब है कि आप उसे सिर्फ़ एक बार एक जगह से दूसरी ऐसी जगह ले जा सकते हैं जहाँ वो किन्हीं भी दो सिक्कों को छू रहा हो।

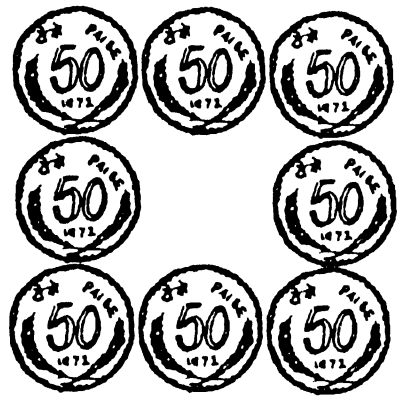

इस पहेली की ज़रूरी बात यही है कि दोनों आकारों में हर सिक्का दो और सिक्कों को छूता रहता है। तो कोशिश करो, सिर्फ़ 5 सिक्कों को सरकाकर नई आकृति बनाने की।

(6)

__चार__ साल की चिन्ना कल से ज़िद पर अड़ी थी कि वह अपने छह साल के गुड्डू भैया की नई निकर पहनेगी। आज जब गुड्डू जी स्कूल चले गए तो उसने मौका देखा और निकर उठाकर पहन ली। कमर से वह कुछ ढीली थी तो उसने बेल्ट की जगह एक मोटी रस्सी पिरोकर बाँध ली। और अब वह दाहिनी जेब में बायाँ हाथ और बाईं जेब में दायाँ हाथ डाले घूम रही है। ऐसा करने में उसे कोई भी नहीं आ रही। बताओ क्यों?

(7)

पिछले दिनों एक पुरातत्वीय खुदाई के दौरान यह पत्थर का टुकड़ा मिला था। लगता था जैसे इस पर किसी प्राचीन भाषा में कुछ लिखा हुआ है। पुरातत्वविदों ने तो इस भाषा को पहचानने और इस लिपि को पढ़ने की कोशिश में जी-जान लगा दी। पर उन्हें कुछ हासिल नहीं हुआ। फिर हमारे पड़ोस के ननकू ने स्कूल जाते हुए एक दिन यह पत्थर देखा और ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा। उसने सब लोगों को बताया कि यह ज़रूर कोई झूठा पत्थर होगा, क्योंकि उस पर तो एक जानी-मानी पहेली खुदी हुई थी। हाँ, पहेली यह थी कि उस पर खुदे आठ चिह्नों को पहचानकर उसके आधार पर ख़ाली जगह वाले छठवें चिह्न को ढूँढना। तुम कोशिश करो ढूँढने की।

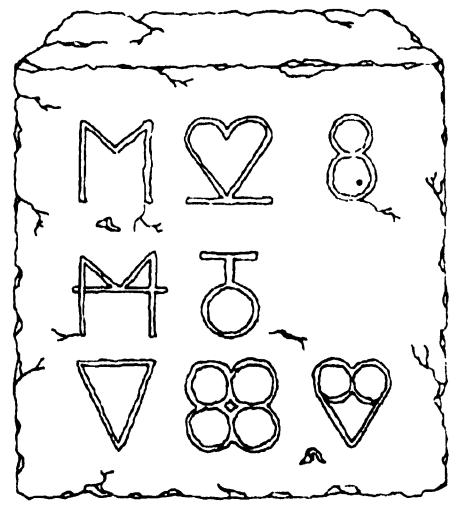

गुब्बारा

एक पेड़ था। वह बरगद का पेड़ था। वह बहुत पुराना पेड़ था। उसके चारों ओर घास थी। एक लड़की रोज़ गुब्बारे बेचने आती थी। वह लड़की उस पेड़ के पास जाकर आराम करती थी। वह जब गाँव में पहुँचती तो सभी बच्चे अपने-अपने घरों से पैसा लाकर गुब्बारा ख़रीदते थे। किसी दिन उनके माँ-बाप पैसे नहीं देते थे। वह अपने दोस्त के साथ खेलते थे। वह लड़की किसी-किसी दिन नहीं आती थी। तो सभी बच्चे बैठे-बैठे उसका रास्ता देखते रहते थे। कोई कहता कब आएगी? सभी लोग उस गुब्बारे वाली लड़की का इंतज़ार करते रहते थे।

चित्र और रचना ● मंदाकिनी, कानपुर, उ. प्र.

रूठना महगा पड़ा

मैं एक दिन मेरी मम्मी से चॉकलेट न देने पर रूठ गई। मैं बाहर जाकर थोड़ी दूर पर एक बड़े पत्थर पर बैठ गई। वहीं पर पास में एक कुत्ता कुछ खा रहा था। मैं उसके पास गई और उसके खाने को पैर से धकेल दिया। वह कुत्ता भड़क उठा। और मुझ पर ज़ोर-ज़ोर से भोंकने लगा। मैं बहुत बुरी तरह से डर गई और दौड़ने लगी। वह कुत्ता मेरे पीछे दौड़ने लगा। मैं दौड़कर अपने घर में घुस गई और मम्मी से लिपट-लिपटकर रोने लगी। मम्मी ने पूछा क्या हुआ? क्यों रो रही हो?

मैंने मम्मी को सारी बात बता दी। मम्मी ने मुझे समझा-बुझाकर सुला दिया। उस दिन मैं एक कुत्ते से अपने आप को कटवाने से बच गई।

अक्षया शर्मा, छठवीं, भोपाल, म. प्र.

लालच

एक दिन मैं और मेरी सहेली हम दोनों मेरे नानाजी के खेत गए। वहाँ पर हमने बहुत-सी चीजें देखी और कई प्रकार के फल फूल देखे। अनाज बोते देखा अनाज को काटते देखा। हमने खाना खाया। पूरे खेत में घूमे। अचानक मेरी सहेली की नजर आँवले के पेड़ पर लगे आँवले के झुंड पर पड़ी। मेरी सहेली ने मुझसे कहा मैं अभी पानी पीकर आती हूँ। और वह आँवले के पेड़ के पास गई। पेड़ के पास एक कुआँ था। वह आँवले के पेड़ पर चढ़ी और उसने आँवले तोड़े। एक आँवला खाते ही उसका पैर पेड़ की शाखाओं से फिसल गया और वह कुएँ में गिर गई।

नम्रता सिंह भदोरिया, छठवीं, भोपाल, म. प्र.

मैंने उसका बहुत रस्ता देखा लेकिन वह नहीं आई। मैं फिर उसे ढूँढने गई तो वह मुझे कुएँ में दिखाई दी। मैंने कुएँ में रस्सी डाली और उसे बाहर निकाला। उसने कहा मैंने तुमसे झूठ बोला था कि मैं पानी पीने जा रही हूँ मैं आँवले तोड़ने आई थी।

रीता जोशी, सातवीं, धार, म. प्र.

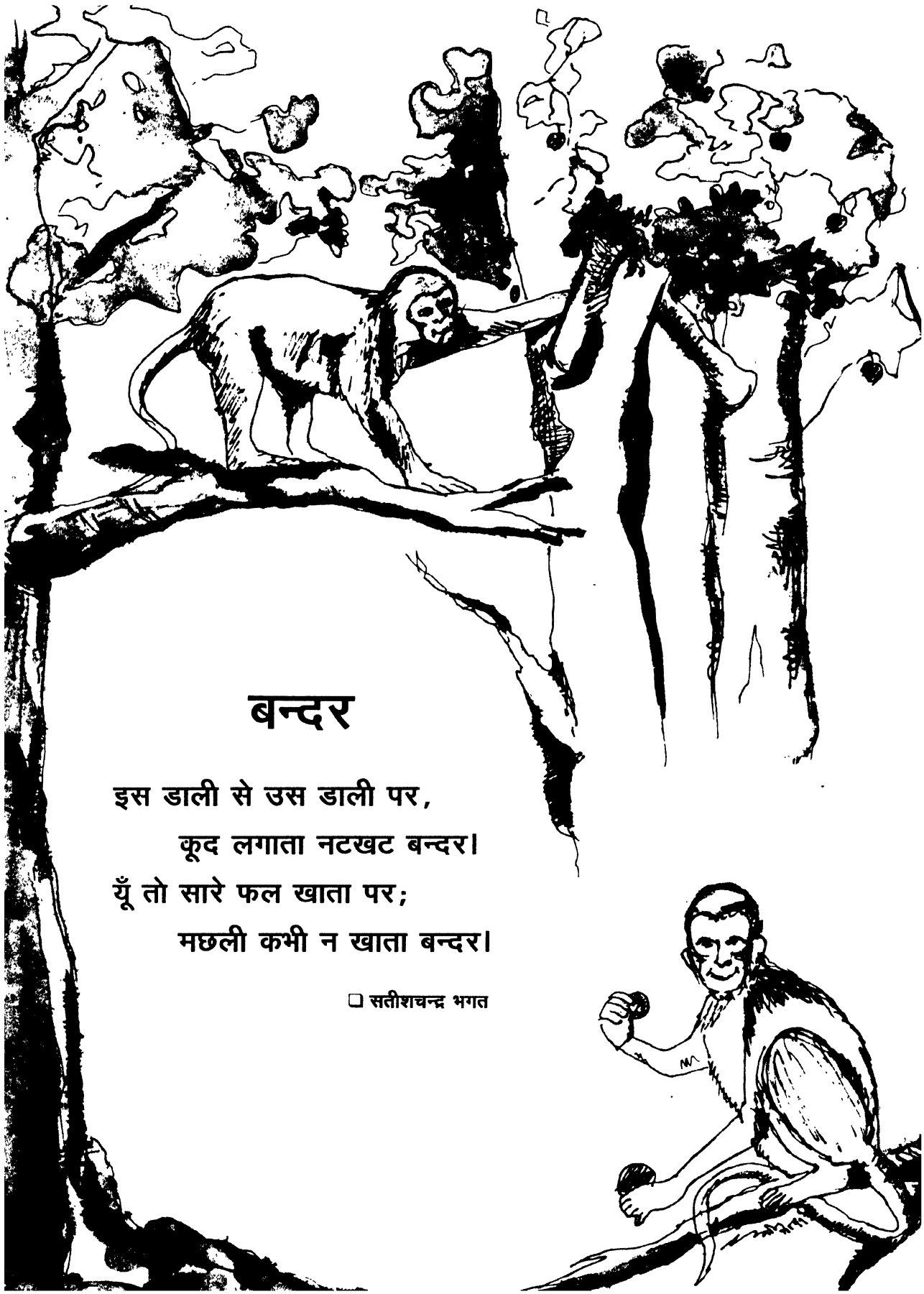

बन्दर

इस डाली से उस डाली पर,
कूद लगाता नटखट बन्दर।
यूँ तो सारे फल खाता पर;
मछली कभी न खाता बन्दर।

❑ सतीशचन्द्र भगत

जान बची

एक दिन हम मंदिर जा रहे थे तो रास्ते में मोड़ और चढ़ाई थी। तो हमारी पड़ोस में रहने वाली रितु दीदी ने गाड़ी ऊपर ले जानी चाही लेकिन गाड़ी अपने आप नीचे फिसलके आ गई और सड़क के दाएँ साइड वाले पेड़ से जा टकराई। हमें बहुत जोर से झटका लगा। पर चोट नहीं आई। फिर आसपास के सब लोग इकट्ठे हो गए और गाड़ी को धक्का लगाने लगे। फिर गाड़ी सड़क पर आ गई। वहाँ की सड़क भी बहुत खराब थी। फिर हमने वहाँ दर्शन किए उसके बाद हम घर आ गए। मैंने सोचा कि अगर वह पेड़ नहीं होता तो हमारी जान नहीं बच पाती।

● **उदिता पटेल, चौथी, इन्दौर, म. प्र.**

पहली ट्रेन यात्रा

आगर से उदयपुर शिविर में जाने के लिए हम पाँच लड़के मंदसौर रेल्वे स्टेशन पर खड़े थे। इनमें मेरा एक छोटा भाई भी था। उसका नाम आशीष है। उसकी यह पहली ट्रेन यात्रा थी। वह घबरा रहा था। उसने पहले तो मना कर दिया कि मैं ट्रेन में नहीं जाऊँगा। लेकिन हम लोगों ने उसे समझाया कि ट्रेन यात्रा में कोई डर वाली बात नहीं है। बहुत समझाने पर वह माना और ट्रेन में चलने को तैयार हुआ। लेकिन उसका डर मन से नहीं निकला था। हमारी ट्रेन आई उसमें भीड़ बहुत थी। फिर भी हम एक डिब्बे में चढ़ गए हमने हमारा सामान ट्रेन में जमाया और जगह न मिलने के कारण खड़े हो गए। तभी उधर से एक लड़की निकली। भीड़ बहुत होने के कारण उसका पैर मेरे भाई के पैर पर लग गया। मेरा भाई बहुत घबराया। उसे ऐसा लगा कि जैसे वह गिर जाएगा। और उसने उस लड़की को मार दिया। लड़की छोटी थी वह रोने लगी। वह अपनी मम्मी के पास जाकर बैठ गई। अब मेरा भाई ट्रेन में यात्रा करने से नहीं डरता।

● **देवेन्द्र कुमार कोठारी, आगर मालवा, शाजापुर, म. प्र.**

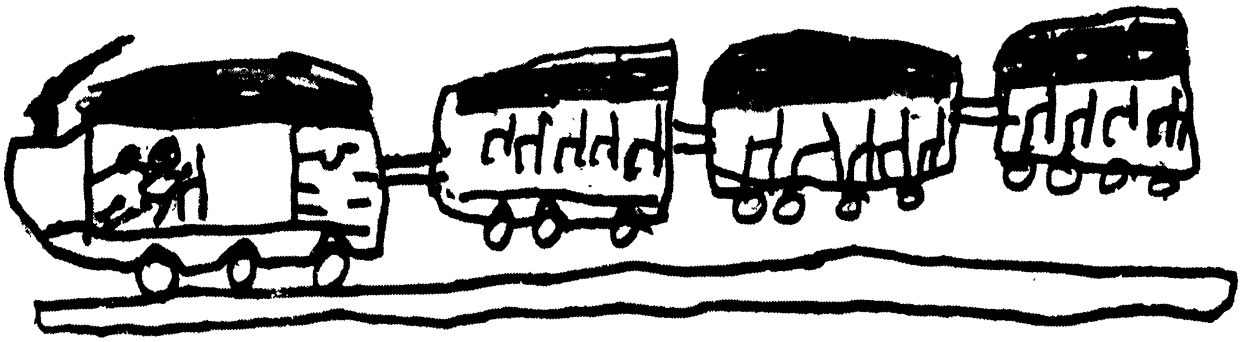

दीपक, पहली (पता नहीं लिखा)

फिलीपीन्स की कहानी

आलसी जुआन

❑ **नीवस रस विलाफलोर्स**

इमली के घने पेड़ के नीचे आलसी जुआन लेटा था। चेहरे के ऊपर हैट खींचकर वह सारा दिन सोता रहा था। अचानक उसको माँ की आवाज सुनाई दी।

"जुआन, कहाँ हो? फिर सो गए? तुम्हारे बराबर आलसी लड़का मैंने नहीं देखा। तुम सारा दिन सोते हो जबकि बेचारा तुम्हारा बाप खेत में कड़ी मेहनत करता है। क्या करूँ मैं तुम्हारा?" जम्हाइयाँ लेता हुआ जुआन उठा, आँखें मलीं, और आलस भरी अँगड़ाई ली। माँ दरवाजे पर मिली। उसने कहा, "बाज़ार जा कर नमक और पाँच जिंदा केकड़े खरीद लाओ। खबरदार, रास्ते में खेलने मत लगना। और जल्दी घर लौटना।"

पैसे लेकर जुआन चला। बाज़ार में उसने एक बूढ़ी औरत को केकड़े बेचते देखा। वह एक लम्बी छड़ी लेकर केकड़ों को चुभोने लगा।

औरत चिल्लाई, "ऐ लडके, मेरे केकड़ों को क्या कर रहा है?"

"मैं देख रहा था कि वे जिंदा हैं या नहीं। बड़े-बड़े रेंगनेवाले पाँच केकड़े दे दो।" जुआन बोला।

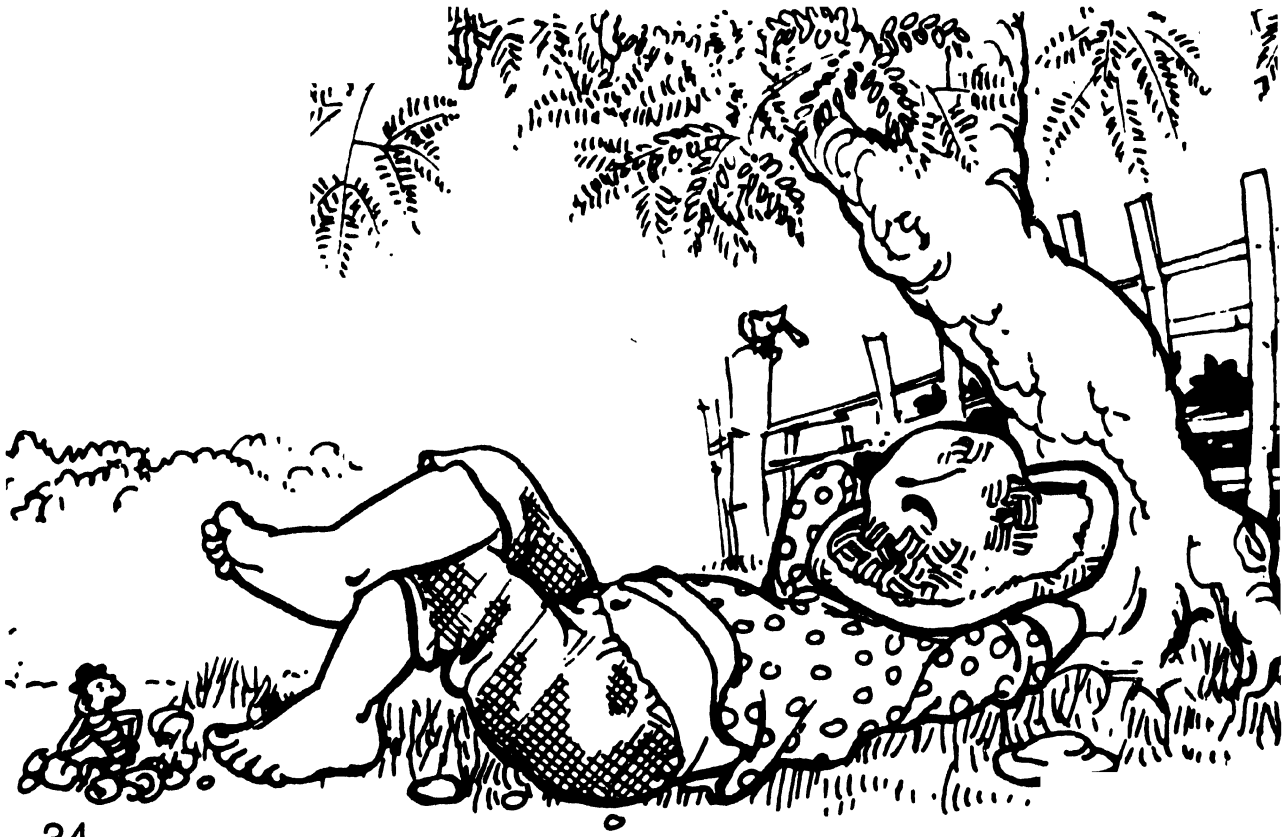

केकड़ों को बँधवा कर वह नमक वाले के पास पहुँचा, "तुम्हारा नमक सच्चा भाई?" उसने पूछा, "अगर नमकीन है तो पचास-सेंटावो (फिलीपीन्स का सिक्का) का दे दो।"

केकड़े और नमक का थैला लेकर जुआन घर चला। सीटी बजाता हुआ वह नदी किनारे पहुँचा तो किसी ने उसको पुकारा, "जुआन, आओ खेलो हमारे साथ। कितना सुहावना दिन है। आओ मजे करें।"

जुआन ने केकड़े और नमक का थैला दिखा कर कहा, "माँ को इनकी ज़रूरत है .... लेकिन, ठहरो.. हाँ, एक तरकीब है।" केकड़ों का बंधन खोल कर उसने उनसे कहा, "माँ तुम्हारा इंतजार कर रही है, घर जाओ। इस सड़क पर सीधे चलते जाओ, इमली के पेड़ से बाएँ मुड जाना। सामने रसोईघर का दरवाज़ा खुला दिखाई देगा। बस वहीं माँ होगी। जाओ, जाओ।" फिर नमक के लिए किसी सुरक्षित जगह के लिए उसने चारों ओर देखा। अंत में उसने नमक के थैले को नदी में रख दिया जहाँ पानी बहुत कम था। "बस यह ठीक है। यहाँ से कोई नहीं ले जा सकता।" उसने खुश होकर सोचा।

देखते ही देखते जुआन लड़कों में जा मिला। वह जी भर कर खेलता रहा और शोर मचाता रहा। जब सूरज डूबने लगा तो उसको घर लौटने की याद आई।

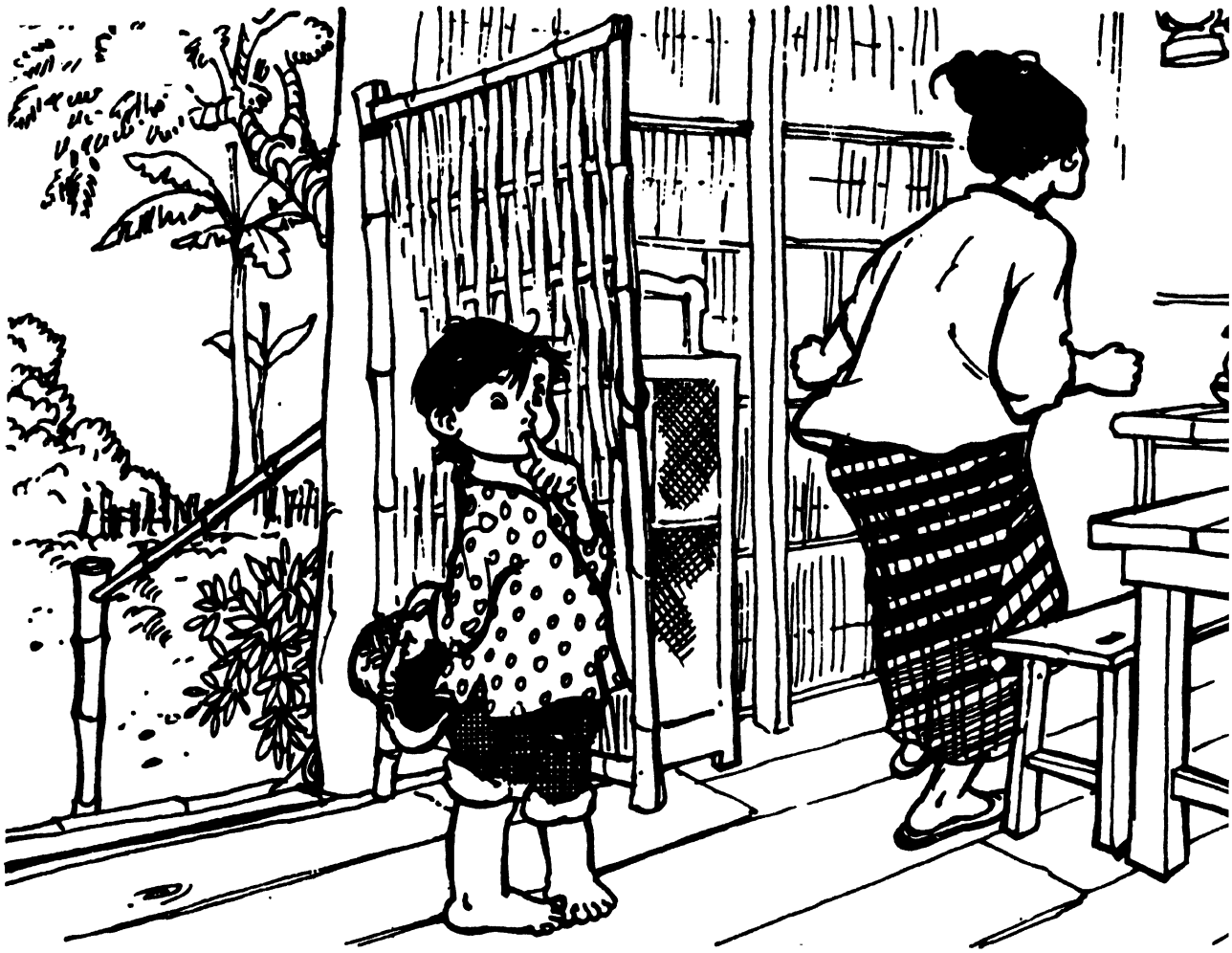

जुआन की माँ इमली के पेड़ के नीचे खड़ी अपने आलसी बेटे का इंतजार कर रही थी। जुआन को देखकर उसने चिल्लाकर पूछा, "क्या जवाब है तुम्हारे पास?"

जुआन ने कहा, "नमक कोई चुरा ले गया!"

गुस्से से माँ फिर चिल्लाई, "चुरा लिया? क्या मतलब?"

"मैंने तो उसको बहुत सुरक्षित जगह रखा था, पानी के अंदर। जब मैं उसको लेने गया तो वह वहाँ नहीं था।"

"और केकड़े?"

"वह घर नहीं आए? मैंने घर का रास्ता उनको साफ़-साफ़ समझा दिया था। और वे काफ़ी अकलमंद लगते थे। और हाँ, ज़िंदा थे, तो चल तो सकते थे।" जुआन ने सफ़ाई दी।

जुआन की माँ गुस्से से काँप रही थी। उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। वह मुड़कर जल्दी-जल्दी रसोई में चली गई और ज़ोर से दरवाज़ा बंद कर लिया।

जुआन बाहर खड़ा सोचता रहा कि उससे ग़लती क्या हुई?

अनुवाद : मोहिनी राव, सभी चित्र : राबर्टो एस.एस.कोलास्टिको
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के सौजन्य से 'आओ, हँसें एक साथ' से साभार)

किताब का विमोचन

कागज़ को बिना काटे - फाड़े, सिर्फ मोडकर तरह-तरह के आकार बनाए जा सकते हैं। इसके कई आधार हैं। ऐसे ही एक आधार 'पानी आधार' पर आधारित 15 आकार बनाने की एक किताब 'एक आधार- अनेक आकार' का प्रकाशन एकलव्य ने किया है।

पटना में आयोजित राष्ट्रीय पुस्तक मेले में 28 नवम्बर, 98 को इस किताब का विमोचन हुआ। एकलव्य के स्टाल के सामने आयोजित एक कार्यक्रम में मेले में आए एक नन्हे बच्चे ने इसका विमोचन किया। इस मौके पर पटना की संस्था 'प्रेरणा' तथा 'समन्वय' के किशोर कार्यकर्ता भी मौजूद थे। चित्र उसी अवसर का है।

इसी मेले में 30 तारीख को यूनीसेफ के पंडाल में चकमक ने 'बच्चों का साहित्य कैसा हो?' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया। इसमें पटना तथा आसपास के आए रचनाकारों ने अपने विचार व्यक्त किए।

रपट ❑ लाल बहादुर ओझा

हाजीपुर में गोष्ठी

पटना से करीब 15 किलोमीटर दूर हाजीपुर के सरस्वती शिशुमन्दिर में 30 नवम्बर, 98 को एक गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी का विषय था, 'बच्चों के चरित्र निर्माण में साहित्य का योगदान'। गोष्ठी में हाजीपुर, पटना के लेखकों के अलावा हाजीपुर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। चकमक की ओर से राजेश उत्साही ने इसमें भाग लिया।

गोष्ठी बाद में बालसभा में बदल गई। बालसभा में विद्यालय के बच्चों ने अपनी रचनाएँ सुनाई। हाजीपुर के राजनारायण चौधरी तथा सतीशचन्द्र भगत एवँ पटना के भगवती प्रसाद द्विवेदी ने भी अपनी कविताएँ सुनाई।

रपट ❑ राजेश उत्साही

बस्ती में स्कूल खुला

इंदौर में बन रहे बाम्बे हास्पीटल के पास अन्ना भाऊ साठे नगर है। वहाँ चन्द्रप्रमाष शेखर नगर के विस्थापित झुग्गीवासी रहते हैं। इस बस्ती में सौ के लगभग बच्चे हैं। वे दिन भर पन्नी और कचरा बीनने का काम करते हैं या फिर मजदूरी करते हैं। अभी तक उनकी पढाई - लिखाई का कोई इंतजाम नही था। हाल ही में बस्ती के लोगों ने अपने ही प्रयासों से बस्ती में एक स्कूल शुरू किया है। स्कूल अभी बस्ती के बगीचे में लगेगा।

उनके इस काम में इन्दौर का कबीर जनविकास समूह भी मदद कर रहा है। यह समूह ऐसे व्यक्तियों का है, जो अपनी रूचि और क्षमता के अनुसार निम्न तबके के समग्र विकास के लिए ठोस काम करने की जिम्मेवारी उठाते हैं।

15 नवम्बर, 98 को कबीर जन विकास समूह तथा एकलव्य देवास ने बस्ती के लोगों के सहयोग से बस्ती में बच्चो के साथ गीत, कहानी, चित्रकला, औरेगैमी तथा खेलकूद की विभिन्न गतिविधियाँ की। साथ ही यह वादा भी किया कि बस्ती के स्कूल के साथ निरन्तर सम्पर्क रखेगे। समय-समय पर विभिन्न गतिविधियों के अलावा अन्य समस्याओं मे भी मदद करेंगे।

रपट ❑ सुरेश पटेल, कबीर जनविकास समूह, इंदौर

तुम्हारे स्कूल में या तुम्हारे मोहल्ले में भी इस तरह की गतिविधियाँ हो रही हो तो 'चकमक समाचार' के लिए हमें लिखकर भेजो। हम इस पेज के माध्यम से उन्हें और पाठकों तक पहुँचाएँगे।

गाड़ी

पुराने पोस्टकार्ड या ग्रीटिंग कार्ड से कई तरह के खिलौने बनाए जा सकते हैं। दरअसल ये खिलौने मोटी कार्डशीट से बनते हैं तो उनको रखना-टिकाना भी आसान होता है। फिर अपने हाथ से अपने खिलौने बनाने की तो बात ही अलग है।

तो इस बार एक गाड़ी बनाएँगे। इसके लिए जो चीज़ें लगेंगी वो पहले इकट्ठी कर लो। मोटी कार्डशीट (पुराने पोस्टकार्ड या ग्रीटिंग कार्ड आदि भी ले सकते हो) स्केल, पेंसिल, गोंद, कैंची आदि।

शुरू करो . . . . . .

(1)

1. एक बड़ी-सी वर्गाकार शीट ले लो। इस शीट में स्केल से नापकर 16 बराबर-बराबर छोटे वर्ग बनाओ।

(2)

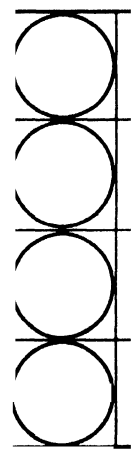

2. शीट के बाएँ किनारे से लगे हुए चार छोटे वर्ग हैं। उन चारों में एक-एक गोला बनाओ। फिर इस बाईं ओर वाली वर्गों की लाइन को काटकर अलग कर लो।
अब इसमें से चारों गोलों को भी काटकर अलग-अलग कर लो।

(3)

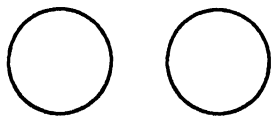

3. ये चारों गाड़ी के पहिए बनेंगे। इसलिए ख्याल रखना कि ये बराबर हों। दो-दो गोलों को एक साथ चिपका लो। इस तरह बन गए दो पहिए।

(4)

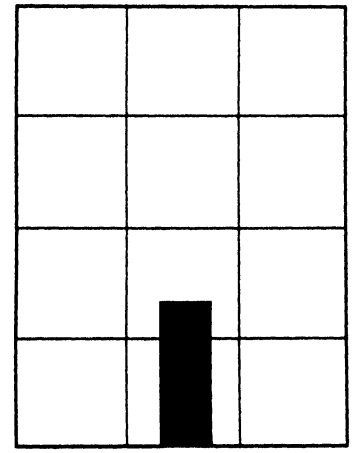

4. अब तुम्हारे पास कार्डशीट में बारह वर्ग बचे हैं। इसमें से काले किए गए हिस्से को काटकर अलग कर दो।

(5)

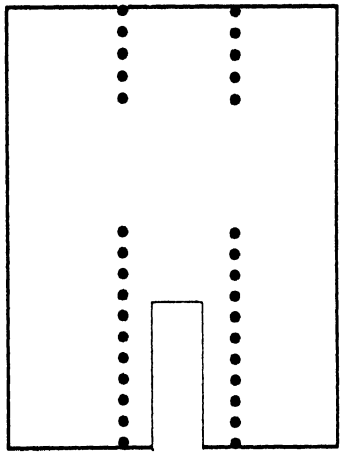

5. अब तुम्हारे पास जो कार्डशीट है वो इस आकार की है। इस शीट में कट लगाना है। चित्र में जहाँ बिन्दु रेखा (.....) दिख रही है वहाँ पर कट लगा दो।

(6)

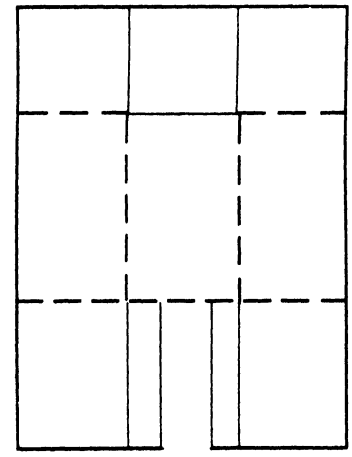

6. टूटी रेखाओं पर से मोड़ बना लो। मोड़ पक्के करके खोल लो।

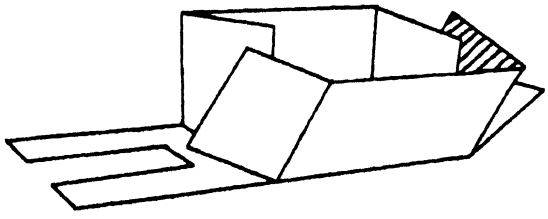

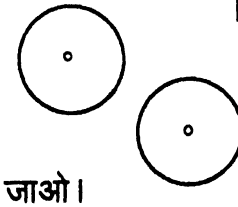

7. फिर एक-एक मोड़ मोड़ते जाओ और चिपकाते जाओ। सबसे अंत में पहियों को भी गाड़ी के दोनों बाजू में चिपका दो।

इस गाड़ी को चलाने के लिए तुम्हें कुछ और भी जुगाड़ करना पड़ेगी। दोनों तरफ के पहियों के बीच में छेद कर लो। इन दोनों छेदों और गाड़ी में एक तार पिरो लो तो गाड़ी चलने लगेगी।

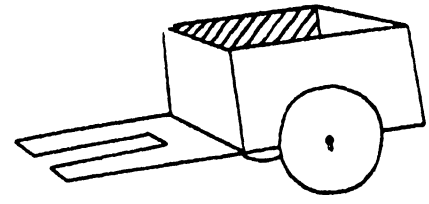

8. बस गाड़ी तैयार है।

एकलव्य के चार नए प्रकाशन

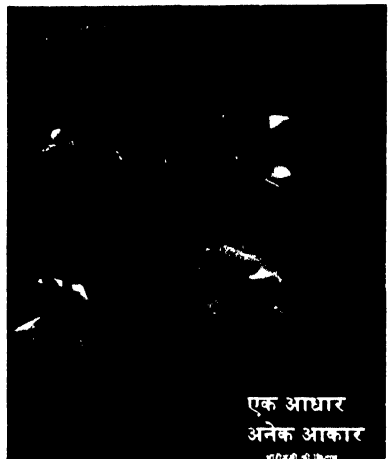

ओरीगेमी पर हिन्दी में पहली बार।
ओरीगेमी यानी काग़ज़ को मोड़कर
तरह–तरह के आकार बनाने की कला।
न गोंद से चिपकाने की झंझट न कैंची से
काटने की।

पृष्ठ 40+4
मूल्य : रु. 20.00

चकमक में प्रकाशित (तुम भी बनाओ,
खेल–खेल में, मज़ेदार खेल) खेल
खिलौनों का संकलन।

पृष्ठ 48+4
मूल्य : रु. 15.00

रोचक कहानी और
सुन्दर चित्रों वाली दो
पुस्तिकाएँ।
प्रत्येक का मूल्य :
रु. 5.00

चारों किताबें रजिस्टर्ड डाक से केवल 50.00
रुपए में प्राप्त करें। राशि मनीआर्डर से या एकलव्य
के नाम में बने ड्राफ्ट से इस पते पर भेजें :

एकलव्य
ई – 1/25 अरेरा कालोनी,
भोपाल 462 016 (म.प्र.)

रैना रावत, पाँचवीं, भोपाल, म.प्र.

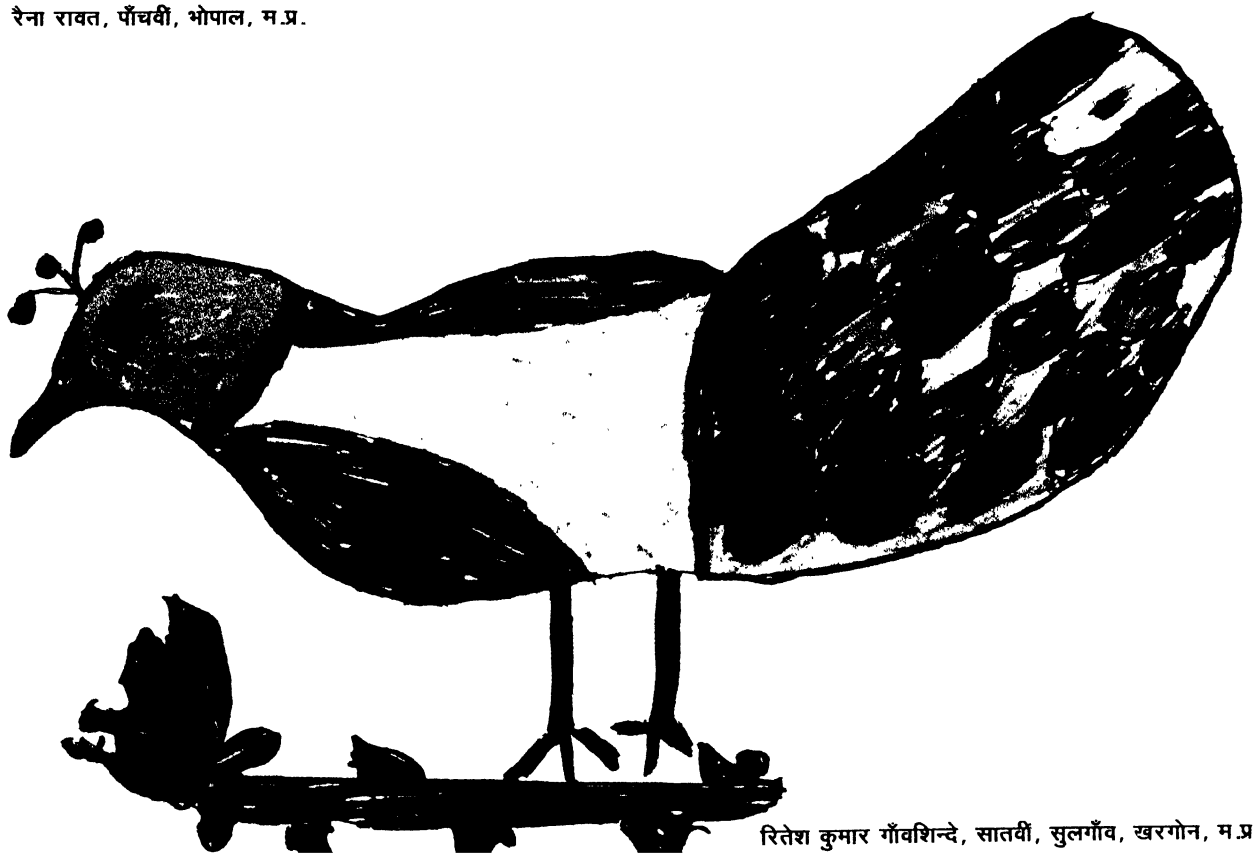

रितेश कुमार गाँवशिन्दे, सातवीं, सुलगाँव, खरगोन, म.प्र.

12526